भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 12 | उदयपुर गुरुवार 01 जुलाई 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मानव तुम सबसे सुन्दरतम

सृष्टि के सभी जीवों में मनुष्य को सबसे श्रेष्ठ और सबसे सुन्दर कहा गया है। प्रकृति सिद्ध कविवर सुमित्रानन्दन पंत ने लिखा, 'सुन्दर है विहग, सुमन सुन्दर, मानव तुम सबसे सुन्दरतम।' सच ही है, मनुष्य की तुलना किसी अन्य जीव से नहीं की जा सकती। अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य इसलिए भी श्रेष्ठ है कि उसे सोच और समझ-बुद्धि प्राप्त है।

लेकिन परमात्मा ने उसे वह शक्ति प्रदान नहीं की कि वह जब जैसा चाहे वैसा करे। इस दृष्टि से उसे मन मिला जो उसके वश में नहीं रहकर जब-तब उसे पतितगामी भी बना देता है।

इस दृष्टि से देखा जाय तो श्रेष्ठत्व की तुलना में कम मनुष्य ही खरे उतरते हैं। इसलिए जो समाज निर्मित होता है, अच्छा कम, बुरा अधिक बनता जाता है। यहां से हिंसाजनित अमानवीय, क्रूर तथा दुर्गुणों के आधिक्य वाला समाज अपना प्रभुत्व जमाता अन्यों पर हावी होने लगता है। ऐसे में दुराचार, व्यभिचार, आतंक एवं अवांछित तत्वों से सराबौर सत्ताधीश का मद चर्मोत्कर्ष पहुंच मानवता की सारी हदें लांघता लगता है। कंस और रावण के समय इस दृष्टि से हमें सोचने को मजबूर करते हैं।

धरती पर जब अमानुषिक प्रवृत्तियां हावी हो जाती हैं शासक दुराचारी, उद्दण्ड, अत्याचारी एवं निरंकुश हो जाता है, प्रजा का त्रास बढ़ता जाता है तब कोई ऐसी उच्चात्मा अवतरित होती है जो प्रजा को त्रासदी से मुक्त कर त्राण दिलाती है। रावण के समय राम का और कंस के समय कृष्ण का जन्म ऐसे ही समय हुआ जिन्होंने रावण-कंस की आसुरी शक्तियों का वध कर सुराज स्थापित किया जिसका असर वर्तमानकाल में भी सीता-राम और राधा-कृष्ण के युगल रूप में जन-गण-मन अधिनायक के रूप में देखने को मिलता है।

लेकिन यह कलियुग है। पिछले कालों से भिन्न होने के कारण इस युग में दूसरे तरह का द्वन्द्व देखने को मिलता है। विश्व के विभिन्न राष्ट्र अपने-अपने ढंग-रंग से अन्य पड़ौसी राष्ट्रों के लिए और अपने ही राष्ट्र में एक-दूसरे दल को पछांटने में लगे हुए हैं। कहीं लोकतंत्र तो कहीं राजतंत्र है। जहां राजतंत्र है वहां का राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को अपना गुलाम बनाये हुए है।

भारत की यही स्थिति रही। वह अंग्रेजों की गुलामी में रहा और आजाद होने की सुगबुगाहट के लिए निरन्तर जूझता रहा पर यह श्रेय मिला मोहनदास करमचन्द गांधी को जिसने पूर्णतया अहिंसात्मक तरीके से बिना किसी शस्त्र, खूनखराबे के अंग्रेजों को अन्ततः भारत छोड़ने पर विवश कर दिया।

ऐसा नहीं है कि इससे पूर्व दौर में ऐसा कोई महापुरुष नहीं हुआ जिसने शान्ति स्थापना के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया। सम्राट अशोक ने कलिंग विजय के दौरान हिंसा का जो ताण्डव देखा उससे उसके मन में वैराग्यजनित भावों का ऐसा उमड़ाव हुआ कि उसने हिंसा का मार्ग त्याग जगह-जगह प्रजा हितैषी कार्य किये। इससे भी पूर्व भगवान बुद्ध और महावीर ने राजपाट का त्याग कर संन्यासी के रूप में जनोपदेश देकर शान्ति स्थापित करने का काम किया जिनका प्रभाव आज भी भारत के अलावा विश्वव्यापी देखा जा रहा है।

हमारे देश में गांधी के बाद उनके पदचिन्हों पर चलकर अनेक संत, महात्मा, धर्माचार्य और पंडितप्रवर हुए। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत और विनोबा भावे ने भूदान के माध्यम से अखिल भारतीय अहिंसात्मक आन्दोलन के माध्यम से शान्तक्रान्ति का शंखनाद किया। वह रेला थमा नहीं है।

किन्तु युग का प्रभाव किसी से छिपा नहीं रहता। लगता है व्यक्ति अपने साथ पैदाइश से ही भय एवं अनिष्ट की आशंका लिए रहता है। समाज के अपने रीतिरिवाज, मान्यता, धारणा, मर्यादा, आस्था एवं विश्वास भी पर भी उसका असर पड़े बिना नहीं रहता। धीरे-धीरे ये सब अन्धविश्वासों, अनुपयुक्त एवं अवांछित रूढ़ियों के शिकार हो जाते हैं। लालच और मजबूरियां भी व्यक्ति को गलत काम करने के लिए बाध्य कर देती हैं।

इन्हीं में हम बलिप्रथा को ले सकते हैं जो किसी भी दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है। विश्व में जितने भी महापुरुष, धर्माचार्य और युगप्रवर्तक हुए हैं, उन सबने हिंसाजनित सभी कार्यों का विरोध करते शान्ति का सन्देश दिया है। एक तरफ विज्ञान की उन्नति दांतों तले अंगुली दबाने वाली है वहीं दूसरी ओर बलिप्रथा का प्रचलन सर्वथा नींदनीय और भर्त्सनीय है। 28 दिसम्बर 2020 के अखबारों में अलवर जिले के मालाखेड़ा थाना क्षेत्र के नावली गांव में ग्यारह वर्षीय बालक की बलि देने के समाचारों ने जो सनसनी फैलाई वह रौंगटे खड़ा कर देने वाली घटना बनी। कहा जाता है कि एक तांत्रिक के चक्कर में आकर धन के लालच में निर्मल नामक बालक के धारदार हथियार से नाक, कान काट सिर में कील ठोक दीं। यहां तक कि पैरों के नाखून तक उखाड़ दिये। ऐसी बाल हत्याओं की खबरें चोरी छिपे सर्वत्र देखने-सुनने को मिल जायेंगी। विश्वगुरु रहे भारत में ऐसी घटनाएं शर्म से नतमस्तक कर देती हैं।

सरकार ने भले ही इसे बन्द करने का कानून बना दिया हो पर स्वार्थी लोगों ने इसके विकल्प में दोहरे-तिहरे गलियारे तक निकाल रखे हैं। अब यह सुनने को मिल जाता है कि माताजी के सम्मुख बलि नहीं करने पर कहीं दूर जंगलों में वीरान जगह यह क्रिया सम्पन्न की जाती है।

कुछ समाजों में इस प्रथा में युगानुरूप बड़ा बदलाव किया है। अपने गांव में धुर बचपन में ही मैंने इसका परिवर्तित अहिंसात्मक रूप देख लिया था। इसमें जन-बलि की जगह प्रतीकात्मक रूप में डोचरा-काकड़ी को चीरते देखा। कहीं आटे का प्रतीक जानवर बनाकर उसके पेट में लाल रंग भर आटे के ही पांव तथा मुंह बनाकर उसका चीरा करते देखा। बड़ी बलि में बड़ा फल कोला, खरबूजा या फिर मतीरा काम में लिया जाता है। धीरे-धीरे जब समाज की सोच तथा समझ-चेतना विकसित हुई, यह प्रथा भी बन्द होती गई।

आइये, कविवर पंत के स्वरों में बेहतरीन प्रतिष्ठा के सहभागी बनकर मनुष्य को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनाने के भगीरथ प्रयत्न में प्रण-प्राण से लग जायें। **- म.भा.**

आकाश छूती पेट्रोल-डीजल की कीमतें

-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत-

कई शहरों में पेट्रोल-डीजल 100 रूपये प्रति लीटर से ज्यादा की आसमान छूती कीमत पर बिक रहा है। आगे भी इन कीमतों के कम होने के आसार नहीं हैं। कीमतें केन्द्र सरकार की कर नीति का अनचाहा तोहफा है जिसे आमजन को झेलने को बाध्य होना पड़ रहा है।

इसे केन्द्र सरकार ने कमाई का जरिया बना लिया है। जब 01 जुलाई 2017 को जीएसटी लागू किया गया था तब पेट्रोल-डीजल को इसमें सम्मिलित नहीं किया गया था। जीएसटी में अधिकतम कर की दर 28 प्रतिशत है, जबकि पेट्रोल-डीजल पर केन्द्र एवं राज्य सरकारें मिलकर लगभग 61 प्रतिशत की दर से आय कमा रही हैं। जब लोकडाउन में कच्चे तेल की कीमतें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गिर रही थीं तब केन्द्र सरकार ने राहत देने के बजाय उत्पाद शुल्क बढ़ाकर अपनी आय बढ़ा ली। यदि यह जीएसटी के दायरे में आता तो केन्द्र सरकार को इससे संग्रहीत होने वाली कर की राशि में राज्यों को बराबर हिस्सा देना पड़ता। इसीलिए यह चालाकी भरा कदम उठाया गया।

देश के संविधान प्रदत संघीय ढांचागत व्यवस्था को कमजोर कर एक नई वैकल्पिक कर व्यवस्था के माध्यम से राजस्व एकत्र करने का तरीका ढूंढ लिया। यह सेस (उपकर) पद्धति है। संविधान के अनुच्छेद 270 के अनुसार केन्द्र सरकार को वित्तीय कमीशन की अनुशंसा के आधार पर एकत्र कर की राशि में राज्यों को हिस्सा देना होता है। वर्तमान में यह 41 प्रतिशत है किन्तु अनुच्छेद 271 के अनुसार यदि केन्द्र सरकार सेस (उपकर) के रूप में कर राजस्व एकत्र करती है तो उसे राज्यों के साथ हिस्सेदारी करने की आवश्यकता नहीं होती है।

पेट्रोल एवं डीजल पर केन्द्रीय कर का 70 प्रतिशत हिस्सा उपकर का है जिसे राज्यों के साथ साझा नहीं किया जाता है। पश्चिम बंगाल के वित्तमंत्री अमित मित्रा का कहना है कि पेट्रोल के मामले में केन्द्र राज्यों की तुलना में दुगुना एवं डीजल पर तीन गुणा कमाई कर रहा है।

केन्द्र सरकार ने 2014-15 में पेट्रोल-डीजल से उत्पाद शुल्क के रूप में 99,068 करोड़ रुपए की आय अर्जित की। वर्ष 2020-2021 में यह आय 293 प्रतिशत बढ़कर 3,89,662 करोड़ रुपए हो गई जबकि राज्य सरकारों की पेट्रोल-डीजल पर वैट की आय इस अवधि मे सिर्फ 31.74 प्रतिशत बढ़ी है।

सच तो यह है कि उपकर किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए लगाया जाता है। सन् 1975 में सरकार ने ऑयल इंडस्ट्री डेवलपमेंट बोर्ड की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य ऑयल इंडस्ट्री को वित्तीय सहायता देना था। बोर्ड के लिए सरकार ने क्रूड ऑयल सेस लगाया। इस पर सेस से 1,24,399 करोड़ रुपए का राजस्व एकत्रित किया किन्तु बोर्ड को फूटी कौड़ी हस्तांतरित नहीं की।

ऐसे ही 2021 के केन्द्र के बजट में एग्रीकल्याण इंफ्रास्ट्रक्चर एवं डेवलपमेंट सेस पेट्रोल एवं डीजल पर लगाया। वर्ष 2018-19 में भी सरकार ने कुल 35 उपकरों से 2.75 लाख करोड़ रुपए एकत्र किए किन्तु उनमें से केवल 1.64 लाख करोड़ रुपए ही सम्बन्धित कोष में हस्तांतरित किए।

घोषणा करते समय तो सरकार वाह-वाह लूट लेती है किन्तु बाद में राजस्व का दुरुपयोग करती है। परिणामस्वरूप देश का सार्थक विकास नहीं हो पाता है। हकीकत यह भी है कि ज्यादा सेस-कर प्रक्रिया को जटिल बनाता है तथा प्रशासनिक एवं अनुपालना लागत भी बढ़ाता है।

पोथीखाना

जतन की जिन्दगी जीते प्रो. प्रेमसुमन जैन

'जतन की जिन्दगी: जैन धर्म' नामक पुस्तक में प्रो. प्रेमसुमन जैन जैनधर्म की बुनियाद अहिंसा को स्थापित कर लिखते हैं- केवल जैनधर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसने अहिंसा की सूक्ष्मातिसूक्ष्म चर्चा की है। यही धर्म जीव, सृष्टि एवं प्रकृति के प्रति प्रेम, सम्मान, करुणा, आदर, सहिष्णुता, दया, मैत्री, स्नेह, क्षमा और समता से व्यवहार करने का बोध देता है।

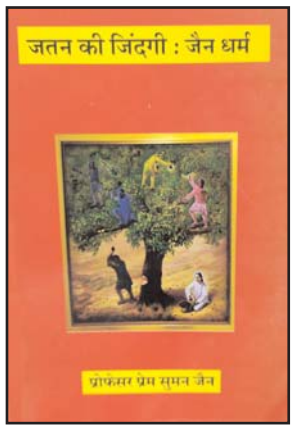

वे कहते हैं, कबीर ने जिसे 'जतन' कहा, जैनदर्शन के चिन्तकों ने हजारों वर्ष पूर्व यत्नाचार धर्म के रूप में प्रतिपादित कर दिया था। अहिंसक भावना से ही करोड़ों प्राणियों को जीवनदान मिल जाता है। जैनसंस्कृति में प्रचलित यह यत्नाचार, जतन की जिंदगी की जीवनशैली विश्व में अनूठी है।

जैनधर्म सावधानीपूर्वक जीवन जीने की कला है। यह एक जीवनपद्धति है। हमारे जीवन की प्रत्येक क्रिया इतनी सावधानी से हो कि दूसरों के जीवन में बाधा न पहुंचे। हमें जो जीवन प्रकृति के संसाधनों से मिला है उसे हम व्यर्थ न गवायें। अपने जीवन को भी विकसित करें और दूसरे के विकास में भी सहायक बनें। जैनधर्म सच्चे मायने में अध्यात्मवादी धर्म है। यह कर्मवाद का पक्षपाती है। वर्गवाद एवं जातिवाद आदि की सीमाओं परे है। जतन की जिन्दगी : जैनधर्म एक नई थीम पर और नई शैली में लिखी गई है। इसका प्रकाशन भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी, उदयपुर द्वारा किया गया है। लगभग सौ पृष्ठों की यह पुस्तक भी सौ रूपया कीमती है।

-डॉ. सुमत जैन

प्रो. प्रेमसुमन जैन की दूसरी पुस्तक 'तीर्थंकर महावीर का सर्वोदयी चिन्तन' है जो ज्ञानवर्धक, सर्वमान्य और सामान्य पाठक एवं प्रबुद्ध वर्ग के लिए प्रेरणादायी है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ के 250 वर्ष बाद 24वें तीर्थंकर महावीर का जन्म ई. पू. 598 में हुआ। ये जैनधर्म के संस्थापक ही नहीं, अपितु उसके परम वैज्ञानिक विश्लेषक थे। उन्होंने परम्परा से प्राप्त श्रमणधर्म को अपनी साधना में आत्मसात किया और लोक के अनुकूल अनेक सिद्धान्तों को जन-भाषा प्राकृत में प्रस्तुत किया था।

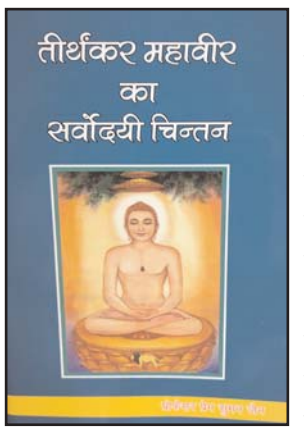

तीर्थंकर महावीर ने रुढ़िवाद, वर्णव्यवस्था, पाखण्ड, असमानता आदि को अस्वीकार कर समता, पुरुषार्थ, नारी स्वातंत्र्य, कर्मसिद्धान्त आदि मूल्यों की स्थापना करने में अपना जीवन व्यतीत करते साधना का वह स्वरूप प्रस्तुत किया जो न किसी गुरु से बंधा था और न किसी शास्त्र से, अपितु व्यक्ति का आत्मसंयम ही उसकी साधना का नियंत्रक था। इस तरह महावीर ने मानव के परमात्मा बनने का मार्ग प्रशस्त करते नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की।

महावीर का सारा जीवन आत्म-साधना के पश्चात् सामाजिक और नैतिक मूल्यों के निर्माण में व्यतीत हुआ। वे किसी एक देश, जाति व समाज के न होकर समग्र मानव जाति के गौरव के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनके चिन्तन ने एकओर व्यक्ति को पुरुषार्थी और स्वावलम्बी बनने की शिक्षा दी वहीं उसे सहिष्णु, निराग्रही होने का भी संदेश दिया। आशा है यह पुस्तक सभी सम्प्रदाय के लोगों को स्वध्याय द्वारा महावीर की अहिंसामय वाणी के प्रचार-प्रसार में प्रमुख सहभागी बनेगी। उदयपुर की महावीर जैन परिषद से सन् 2002 में इसका प्रथम संस्करण आया और यह द्वितीय संस्करण भी सौ रूपये का ही है।

- डॉ. कहानी भानावत

विजय की मंगल आराधना

अपने इष्ट की जो भी आराधना करता है उसकी सर्वदा मंगल विजय होती है। इस दृष्टि से प्रत्येक धर्म-सम्प्रदाय से जुड़ा हर व्यक्ति किसी-न-किसी इष्ट का स्मरण लिए है। इष्ट के प्रति उसकी गहन आस्था, निरन्तर स्मरण और दृढ़ विश्वास हर समय उसे सम्बल दिये रहता है जिससे वह अपना जीवन सार्थक किये रहता है। अन्य अर्थों में श्री शान्त क्रान्ति जैन श्रावक संघ के प्रथम आचार्यश्री विजय के श्रीचरणों में मंगल आराधना की भी यह श्रद्धा समर्पण पुष्पांजलि है।

प्रस्तुत पुस्तक 'विजय मंगल आराधना' जैन धर्मावलम्बी नवरत्न नागोरी द्वारा अपनी धर्मपत्नी तीजादेवी के वर्षीतप के पारणे की समाप्ति पर अक्षय तृतीया के शुभ दिन प्रकाशित की गई है। वे लिखते हैं- 'मेरी धर्मसंगिनी को तपस्या की प्रेरणा अपने परिजनों एवं रिश्तेदारों से मिली। वे कहती रहती हैं कि जीवन में खुशहाली लाने के लिए उपवास, एकासना करने के साथ क्रोध, मान, माया, लोभ, अपशब्द, जोर-जोर से बोलने, गलत बात को सही ठहराने जैसी प्रवृत्ति से बचना चाहिये। बहू के साथ बेटी जैसा व्यवहार करना चाहिये।'

जैन समाज में तपस्या का बड़ा महत्त्व है। तीजादेवी ने उपवास, आयम्बिल से लेकर नौ दिन तक तपस्या की। पिछले दस-बारह वर्षों से पर्युषण पर तेला अर्थात् तीन दिन निराहार रहने की तपस्या करती आ रही हैं। गत दो-तीन वर्षों से वर्षीतप कर रही हैं। इसमें पूरे वर्ष एक दिन खाना और दूसरे दिन भूखा रहना होता है।

यों नवरत्नजी का पूरा परिवार ही सामाजिक प्रतिष्ठा लिए आगेवाणी धर्म-संस्कारी रहा। पुस्तक सम्पादक डॉ. महेन्द्र भानावत ने उनके लिए लिखा- 'भीण्डर निवासी नवरत्नजी के पिताश्री रतनलालजी आदर्श समाजसेवी, ईमानदार उद्योगी तथा राजनीति में गम्भीर पैठ के हिमायती थे। उनका मृदुल व्यवहार तथा निस्पृह जीवन अनायास ही सबको अपना बना लेता। वे प्रतिदिन अपनी गुल्लक में कुछ-न-कुछ पैसा डालते। उससे उन्होंने श्मशानघाट पर विश्रांतिगृह एवं लकड़ीघर बनवा दिया। सचमुच में उनकी गुल्लक में गोरख जागे। अल्पबचत के कुल्लड़ में हुल्लड़ तो अब चले हैं।'

कुल 240 पृष्ठीय इस पुस्तक में जैन समाज में प्रचलित सिद्धान्तों के अनुरूप प्रात: स्मरणीय साधनापरक भक्तिचर्या से लेकर संध्या-रात्रि तक भजनीय प्रार्थना, स्तवन, पाठ, भावना, मृत्युमंगल, स्तोत्र, तीर्थंकर, चौबीसी, भजन, सीख जैसे 135 विषयों में बड़ी ही महत्त्व की मूल्यवान स्मरणीय सामग्री दी है। सबसे मोटी बात तो यही है कि पुस्तक का मूल्य-पठन-पाठन रखा है। बीकानेर के अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स ने इसका सुन्दर सुहावन मनभावन प्रकाशन किया है।

-डॉ. तुक्तक भानावत

अविश्वास का विश्वास

सुबह-सुबह अमिताभ का फोन आया। कहा, 'माथुरजी मेरा बेटा बीमार है। वह अपने पैरों पर ठीक से नहीं खड़ा हो पा रहा है। उसके दोनों पैर लटक से गए हैं। मुझे तो बड़ा डर लग रहा है, कहीं बच्चे को पैरालाइसिस न हो गया हो। आपका बेटा रवि चाइल्ड स्पेशलिस्ट है। आप कहें तो मैं बेटे को आपके यहाँ ले आता हूँ।'

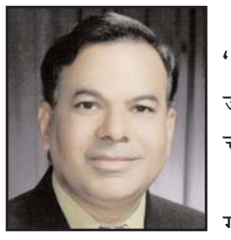

अमिताभ माथुरजी के पुराने सहकर्मी हैं। बोले, 'हाँ हाँ आ जाओ। जल्दी आ जाओ। उसे हॉस्पिटल भी जाना है। यदि जल्दी नहीं आ सकते तो सीधे हॉस्पिटल चले जाना। वहाँ देख लेगा।'

इतने में अमिताभ अपने बेटे को लेकर आ ही गये। रवि ने सबसे पहले यही पूछा, 'आज बच्चे का कोई एग्ज़ाम वगैरा तो नहीं है। यदि है तो घबराने की कोई बात नहीं है।' रवि ने बच्चे की जांच करने के बाद दवा दे दी। वहीं लिटा दिया। बच्चा थोड़ी ही देर में नॉर्मल हो गया और सीधा खड़ा हो अपने पैरों पर चलने लगा।

कुछ देर बाद अमिताभ ने पूछा, 'बेटा कितने पैसे दूँ?' रवि मुस्कराते बोला, 'अंकल कुछ नहीं। आगे कभी कोई दिक्कत हो तो हॉस्पिटल आ जाया करो, सीधे मेरे रूम में। वहां सारी सुविधाएं भी हैं।' यह कहकर रवि हॉस्पिटल के लिए रवाना हो गया।

अमिताभ चलने लगे तो माथुरजी ने कहा, 'अरे भई बैठो। चाय पीकर जाना।' चाय पीने के बाद दोनों ने कुछ देर तक गपशप की और इसके बाद अमिताभ ने माथुरजी का धन्यवाद किया और बेटे के साथ घर की राह ली। दूसरे दिन माथुरजी ने पूछा, 'बेटा कैसा है। कोई प्रॉब्लम तो नहीं?'

अमिताभ ने उत्तर दिया, 'नहीं प्रॉब्लम तो कोई नहीं। मैंने फिर आपके यहां से आने के बाद बेटे को एक और डॉक्टर को दिखाया। दो-तीन टेस्ट भी करवाए। सब ठीक निकले। दो हजार रुपए तो लगे पर घरवालों को तसल्ली हो गई। बेटे को स्कूल के लिए मेडिकल सर्टिफिकेट भी चाहिए था। कल आपको सुबह ही सुबह परेशान किया।' माथुरजी बोले, 'पडोसी हैं ही किसलिए और फिर अपन तो वर्षों तक साथ-साथ रहकर काम भी कर चुके हैं।'

- सीताराम गुप्ता

प्रविष्टियां आमंत्रित

चित्तौड़गढ़ की 'संभावना' संस्था द्वारा स्वतंत्रता सेनानी रामचन्द्र नन्दवाना के नाम पर दिए जाने वाले सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित की गई हैं। अध्यक्ष डॉ. के. सी. शर्मा ने बताया कि सम्मान में स्वतंत्रता आन्दोलन, प्राच्य विद्या, गांधी अध्ययन, दलित चिन्तन या भारतीय मध्यकालीन साहित्य की किसी एक कृति पर ग्यारह हजार रुपये, प्रशस्तिपत्र और शॉल भेंट कर समारोहपूर्वक सम्मान किया जाएगा। संभावना के सहयोगी डॉ. कनक जैन को संयोजक बनाया गया है।

- डॉ. कनक जैन

इसी प्रकार दिल्ली के 'स्वयं प्रकाश न्यास' ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्वयं प्रकाश की स्मृति में दिए जाने वाले सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित की हैं। अध्यक्ष प्रो. मोहन श्रोत्रिय के अनुसार सम्मान में कहानी, उपन्यास और नाटक विधा की ऐसी कृति को चुना जाएगा जो अधिकतम छह वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई हो। यह सम्मान भी ग्यारह हजार रुपये, प्रशस्तिपत्र और शॉल भेंट किये जाने का है। इसके लिए आलोचक डॉ. पल्लव को संयोजक बनाया गया है। प्रविष्टियाँ 30 जुलाई तक 393, डीडीए, ब्लॉक सी एंड डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088) पर भिजवाई जा सकेंगी।

-प्रो. मोहन श्रोत्रिय

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा हिन्दी व राजस्थानी भाषा-साहित्य के मौलिक लेखन को सम्मान प्रदान करने के लिए डॉ. नंदलाल महर्षि तथा पं. मुखराम सिखवाल की स्मृति में राजस्थानी साहित्य सृजन पुरस्कार हेतु कृतियां आमंत्रित की गई हैं। इसके लिए संस्थाध्यक्ष श्याम महर्षि से 31 जुलाई तक एन. एच. 11 जयपुर रोड, श्रीडूंगरगढ़ राज. 331803 पर सम्पर्क करें।

-श्याम महर्षि

दो तुक्तक

(1)

कोरोना घटना नहीं, दुर्घटना है यार
कैसे लग-लग कर लगता है, कैसे देता हार।
समझना दुष्कर है
कहां इसका घर है
कब इसका खात्मा होगा और डूबेगा मझधार।

(2)

कितने और थपेड़े लेगा, कितनी लहरें देगा?
अड़क्ये कुत्ते सी दुत्कारें, तू घर-घर से लेगा?
समझो अन्त बुरा होगा
सावचेत होजा भोगा
खाता रहे गुड़ीन्दा बच्चू, ठोकर चौराहा जोगा।

स्मृतियों के शिखर (126) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लोकजीवन में कानोंकान खबर (1)

लोकजीवन को हमारे यहां कई रूपों और संदर्भो में परिभाषित किया गया है। हमने प्राय: पश्चिमी संदर्भ को लेकर ही इसे अधिक देखा जबकि भारतीय संदर्भ में लोक की अवस्थिति और अवधारणा भिन्न है। यहां की परम्परा का लोक गत-विगत की स्मृति नहीं होकर निरन्तर विद्यमान अनुभवजनित अस्तित्व का रूपांकन है जो समष्टि के साथ चलित फलित होता मानव और प्रकृति से बेजोड़ जोड़ रखता है।

संस्कृत के व्युत्तिपरक अर्थ में लोक का अर्थ है देखा या जो प्रकाशित किया जा सके। इस दृष्टि से पूरी सृष्टि का सांगोपांग ही लोक में परिदृष्टित है। सृष्टि के रचाव में जो कुछ हमें दृष्टिगत हो रहा है- वन, पर्वत, नदी, पशु, पक्षी, भूमि तथा इन सबको संवारता मनस्वी मानव है वह लोक है। जन है जो सतत जीवंत, प्रवाहमान सत्ता है। जो सब ओर झूंपों, अढलियों, झोंपड़ियों, ग्रामों, नगरों, धूणियों, गुफाओं का विस्तार लिये है। वह किसी पर आश्रित नहीं होकर अपने ही ज्ञान-ध्यान, कर्म-धर्म से चलायमान सदैव प्रासंगिक बना रहता है।

लोकज्ञान :

लोक में परिव्याप्त अथाह ज्ञान किन्हीं पोथियों की शोभा नहीं बढ़ाता अपितु जो शास्त्र, पुराण, वेद, उपनिषद रचे गये वे लोक निहित ज्ञान के ही सुज्ञान हैं। यह सुज्ञान-ज्ञान कंठ-दर-कंठ कंठासीन होकर एक-के-बाद दूसरी क्रमश: नई आती पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहता है। इसलिए पारंपरिक होते हुए भी नित नया नव्य-भव्य बना रहता है। जैसे पतझड़ के बाद बसंत का आगमन होता है, वैसे ही नित नूतन, हर पल-क्षण, दिन-मास, वर्ष, ऋतुएँ, त्यौहार, उत्सव, मेले ठेले; सब के सब वही-वही होते भी अपने फेर और फेरी में नये अंदाज, नये रूप, नये उल्लास और रंग रूप में दृष्टिवंत होते हैं।

लोक का यह विराट वितान और उसकी छाया तले सारे विधि-विधान, कला-संस्कृति के सोपान, ज्ञान-विज्ञान के सरोकार साकार बने हमें मोहित किये रहते हैं। ऐसा यह लोक सबका जाना-पहचाना मुखर-निखर होता हुआ भी रहस्यमय चमत्कारों से अबूझ तथा अनोखा बना हुआ है। ऐसी लोक-दृष्टि और सृष्टि का निर्माण केवल मनुष्य ही नहीं रचता है, पूरी प्रकृति भी उसी मनोभाव से हमारे साथ भावी मायावी बनी हुई है।

मनुष्य ने प्रकृति के साथ जुड़कर आपसी तालमेल बिठाने, एक दूसरे के संकेतों को समझने, दूर-दूर तक संदेश पहुँचाने तथा खबर पहुँचाकर खबरदार करने के लिए समय-समय पर अनेक खोजें की हैं। उनमें से कतिपय का जिक्र यहां द्रष्टव्य है।

प्रकृति-मानव का मेल :

सृष्टि के बहुत प्रारंभ की बात करें तो यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि प्रारंभ का मनुष्य प्रकृति के अन्य कायों की तरह ही रहा। पृथ्वी, आकाश, अग्नि, हवा, वनस्पति और त्रस जीवी कायों के होले-होले करतब उसने देखे और उन्हीं के अनुसरण से अपना अलग वजूद बनाया। जहां उसने शेर की दहाड़ सुनी वहीं हाथी की चिंघाड़ भी उसके कानों में गूंजी। घोड़े की हिनहिनात ने जहां उसे आकर्षित किया वहीं गधे की तिभोंक से भी उसे अचरज हुआ।

ऐसे ही उसने गाय की रंभान सुनी तो ऊंट की गड़गड़ाट भी सुनी। मेंढ़क की टर्र-टर्र ने भी उसे मोहित किया तो कौए की कांव-कांव तथा कोयल के पिहु-पिहु के स्वर ने भी सुख दिया। ऐसे ही हवा की सरसराहट, बादल की गर्जन, बिजली की कड़कडाहट तथा बरसात की रिमझिम से उसने भी सीख लेकर अपने स्वर स्फूर्त करने की चेष्टा की।

इन थलचरीय, जलचरीय और नभचरीय प्राणियों की देखादेख उसने भी लगातार कोशिश की। कभी हाथ की तालियाँ बजाकर तो कभी जंघों पर ताल देकर, कभी गाल फूलाकर उन पर हाथों का ठप्पा मारकर तो कभी मुँह पर अंगुलियों की आड़मारी से उसने विविध संकेतों, स्वरों की सृष्टि की। ऐसे ही चट्टान पर पत्थर टकटक-ठकठककर अपना अस्तित्व अलसाते विविध संकेतों की समझ निकाली।

वनस्पति जगत को भी मनुष्य ने अपना कम सहचर नहीं बनाया। पत्तों को पत्थरों का आलंबन दे हवा के दबाव से जो स्वर-संधान किया वह भी अपने आप में अनूठी उपलब्धि कही जाएगी। गांवों में तो आज भी प्रकृतिजनित इन सारे तत्वों, उपादानों से बालक-बालिकाओं से लेकर बड़ों-बड़ों तक की जोड़मरोड़ का जायका लिया जा सकता है।

इन सब कायिक जीवों के साथ मनुष्य का तालमेल अन्तरंगता के साथ बना रहा जो आज भी बना हुआ है। इनमें मनुष्य ही वह पाणी है जिसकी हरचंद कोशिश विकासमान होती रही। यही कारण है कि इन सबमें मात्र मनुष्य ही सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ ज्ञानधारी जीव बना हुआ है।

ये सब कौशल एक लम्बे काल-खंड के विकास-दर-विकास प्रजनन के साक्षी रहते धीरे-धीरे, धीमे-धीमे अपना कोई स्वरूप निर्धारित कर पाये। मानव के साथ अन्य सभी जीवों में आज भी उस प्राथमिक काल के प्रथम चरण से लेकर अधुनातनता के सभी स्वरूपों की साक्षियां तलाशी जा सकती हैं। इस प्रकार लोकमाध्यमों के ठेठ आदिमपन के रूप-स्वरूप परत-दर-परत के इतिहास के पन्ने खोल सकते हैं।

हेला द्वारा आह्वान :

लोकजीवन में हेला से तात्पर्य संदेश प्रेषित करने, आह्वान करने तथा स्मरण कराने से है। यह अलग-अलग रूपों में, अलग-अलग ढंग से दिया जाता है। विशिष्ट अवसरों तथा उत्सव संस्कारों पर देवी-देवताओं के स्मरण में विभिन्न प्रकार के गीत तथा मान-मनौती के माध्यम से अनुष्ठानपूर्वक आयोजन के समय हेला देने की परम्परा है।

किसी मुश्किल घड़ी में भी हेला दिया जाता है। रात्रिजागरण पर देवी-देवताओं के आह्वानपरक गाथा-गायकियों द्वारा भी देवस्थानों पर भक्त लोग एकत्र होते हैं। कई स्तुतियों, स्मरणियों, लावणियों तथा भिन्न-भिन्न छंदावलियों में भक्तिगान की विरूदावलियां सुनने को मिलती हैं। मन्नतों के माध्यम से कई सारी कठिन क्रियाएँ भी हेला देने की माध्यम बनी हैं।

उदाहरण के लिए लोकदेवता रामदेव अथवा रामा पीर को लेकर जो रंजनपरक आनुष्ठानिक प्रदर्शन देखने को मिलते हैं उनमें 'म्हारो हेलो सुणोनी रामा पीर' की पुनरावृत्ति में उनकी जीवनलीला तथा चमत्कारिक एवं लीलाजनित रहस्यमय घटनाओं का दरसाव सहज ही उनके प्रति दृढ़ आस्था का कारक बन जाता है। बिना चमत्कार के कोई सहज रूप से नमस्कार अथवा नमन भाव नहीं रखता है।

कामड़ महिलाएँ ऐसे हेला गीतों के भजनों के माध्यम से रात-रात भर तेराताली के प्रदर्शन कर अथक बनी रहती हैं। कल्लाजी राठौड़ के सेवक उनकी कीर्ति में 'कल्ला कीरत राव री हेलो कोस हजार' के बुलंदी स्वरों में पूरे वातावरण को वीरोचित बनाने का कमाल दिखाते हैं।

हेला दंगल :

हेला का एक अन्य रूप ख्याल-दंगल के जुड़ाव के रूप में भी देखने को मिलता है। ये दंगल कुश्ती के दंगल नहीं होकर आपसी हेलमेल तथा भाईचारे को बढ़ावा देने के होते हैं। गांवों में विविध मंडलियों के माध्यम से एक निश्चित समय और जगह इनके जुड़ाव होते हैं। काव्यपरक छंदबद्ध लय-ताल तथा मधुर एवं आकर्षक गायकियों द्वारा कलाकार मिलकर समाबांध देते हैं। मुख्य रूप से सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक घटनाओं, विसंगतियों, विवादों, व्यवस्थाओं तथा विधिविधानों को लेकर मनोविनोदपूर्वक व्यंग्योक्तियों, कटाक्षों के माध्यम से जो चोट करते हैं वे लाजबाब और बड़ी बेढ़ब होती हुई भी कुतुहल देती कमाल होती हैं।

गुरु और मंडली के उस्ताद के सान्निध्य में गायक कलाकार काव्योत्कर्ष की जो रसवर्षा करते हैं उससे हर श्रोता-समूह दिलदार हुए बिना नहीं रहता। सवाईमाधोपुर के लालसोट कस्बे में गणगौर के तुरंत बाद यह हेला-ख्याल-दंगल पिछले करीब साढ़ा तीनसौ-चारसौ वर्षों से आयोजित होता आ रहा है।

आसपास, दूर-दूर तक के गांवों में अनेक गायक मंडलियां इस आयोजन तिथि की हूंस लिए रहती हैं। मंडलियों के उस्ताद तथा गुरु बिना किसी अध्ययन, प्रशिक्षण तथा शिक्षण के समसामयिक घटनाओं, सामाजिक कुरीतियों तथा अनहोनी घटनाओं को लेकर लयबद्ध गायकी के साथ अभिनय के विशेष हुनर में जनताजनार्दन के बीच जो टिप्पणियों, चिंगारियों, चुनौतीपूर्ण भर्त्सनाओं की बौछार करते हैं उससे जिम्मेदार लोग आहत हुए बिना नहीं रहते। उ

नके कारनामों पर खुलकर उन्मुक्त रूप से जो चोट की जाती है वह कई दिनों तक भुलाई नहीं जा सकती। छत्तीस-छत्तीस, बहत्तर-बहत्तर घंटे चलने वाले ये दंगल बारी-बारी से सभी मंडलियों की रंगत देते हैं।

ऐसे दंगल में पचास हजार तक ग्रामीणजनों की उपस्थिति सबको चौंकाने वाली होती है। दंगल में प्रधानमंत्री से लेकर गांव का सरपंच, पटवारी, थानेदार, बनिया, विधायक, कलेक्टर, कमिश्नर, सांसद, नेता तक तबीयत से निशाना बनाये जाते हैं। बलात्कारी, अपहरणिये, लुच्चे, लंपट, घिनौने; सबकी बखिया उधेड़ दी जाती हैं। उदाहरण-

(अ) थानेदार ने पैसा खाया, उन पर झूठा केस लगाया।
दोनों को थाने में बुलाया, जबरन खोटा कर्म कराया।।
न्याय कहाँ बताओ, गोली से उसे उड़ाओ।
चौराहे पर डलवाके, पागल कुत्ते छुड़वाके।
तभी चैन से बैठूं, कान कांकरी ऐंठू।।

(ब) हिन्दुस्तान के शासक को हिन्दी न बोलने आती।
अंगरेजी में भाषण देने मेम विदेशी आती।।

लालसोट में आने वाले राधारमण संगीत मंडल, लक्ष्मीनाथ मंडल, सैनी मंडल, पारख मंडल, महाकाली मंडल, देवनारायण मंडल, गोपाल मंडल; इनमें ऐसे कलाकार मिल जायेंगे जो अपने दादा तथा पिता के साथ सदैव आते रहे हैं। वहां तीन-तीन, चार-चार पीढ़ियों का कमाल भी देखने को मिल जाएगा। कई कलाकारों से भेंट करने पर ज्ञात हुआ कि वे पढे-लिखे नहीं हैं। सामान्य किसान के रूप में खेतीबाड़ी करते हैं। अन्य लोग भी ऐसे ही हैं जो अलग-अलग तरह का धंधापाणी करते हैं पर उनके दिल में सुरसत माई बैठी है जो परिस्थिति को भांपकर तत्काल ही काव्य-वर्षा कर रंगत जमा देती है।

हेला सूचना :

रेगिस्तानी इलाकों में फैले मीलों लम्बे टीलों, ढाणियों तथा झूंपों में बसे छितरे-परिवारों को सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से जोड़ने के लिए 'किस्बी' होते हैं जिनके माध्यम से व्यक्तिगत सूचना-संदेश एक-से-दूसरे तक पहुंचाये जाते हैं। सूचनाएँ पहुंचाने की एवज में लोग उनको पोतिया बांधते अर्थात उनके भरण-पोषण विवाह आदि की जिम्मेदारियां वहन करते। संदेश वाहक वाक् चातुर्य का धनी, चुस्त और फुर्तीला होता है।

वह उस सारे वर्ग से ठेठ अन्दर तक बड़ी आत्मीयता से जुड़ा रहता है। उनके भीतर-बाहर की सभी बातों को जानता हुआ बड़ी होशियारी से सबका प्रिय, सबमें लोकप्रिय बना रहता है। वह उनमें इतना खास बन जाता है कि उसके अभाव में सगाई सगपण, जनम, जलमा तथा ओसर-मोसर तक के सारे काम रूक जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में नाई, सेवग, मेघवाल, बांभी, भील, मीणा आदि हेला पद्धति से संदेश प्रसारण का काम फटाफट करने में कुशल होते हैं।

बाड़मेर यात्रा के दौरान वहां के नेहरू युवक केन्द्र के भुवनेश भानु ने 1० मार्च 1995 को पारम्परिक हेला पद्धति के संबंध में बड़ी रोचक जानकारी देते हुए बताया कि रेतीले टीलों में रहने वाले वर्ग में एक वर्ग ऐसा भी था जो संदेश वाहक के रूप में कार्य करता था। ग्रामीण समाज में 'किस्बी' होते हैं, व्यक्तिगत कार्य के लिए। व्यक्तिगत सूचनाएं एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाई जाती थीं। परिवार जिनके लिए काम किया जाता था, पोतिया बांधते। पोतिया बांधने का मतलब ग्रामीण समाज में उसके भरण-पोषण, विवाह आदि की सारी जिम्मेदारियों को वहन करना। शादी-ब्याह की हों या सगाई, ओसर-मोसर की हों या रियपण की; किसी भी प्रकार की सूचना लानी हो या देनी हो, उनकी वाक चातुर्यता और दूसरे परिवार के अन्दर तक की खबर बातों-बातों में बाहर निकालने की शैली का आज भी ग्रामीण समाज इनका लोहा मानता है।

सेवगणियां आज भी इस काम में मदद कर रही हैं। आतु नाई और आतु मेघवाल आज भी अपनी भूमिका को प्रभावी बनाए हुए हैं। उन्होंने कहा कि हेला विधि की परम्परा का अपना युग रहा है। इस हेला परम्परा के प्रमुख कर्त्ता-धर्त्ता गांव के बांभी रहे हैं, जो गांवबांभी कहलाते हैं। गांवबांभी मेघवाल समुदाय में से होता था। गांव के हर राज-काज और सामाजिक काज से गांवबांभी का जुड़ाव रहता था।

गांवबांभी सम्पूर्ण गांव को सूचनाएं देकर जोड़ता था। गांव के हाकिमों द्वारा पुलिस संबंधी कार्य में इकट्ठा होना या हो या राजस्व सम्बन्धी कार्य में इकट्ठा होना हो या राजस्व सम्बन्धी कार्य के लिए गांव को सूचना देनी हो या मंदिर-मेले की बात गांव के लोगों तक पहुंचानी हो अथवा गांव पर आए संकट की स्थिति से अवगत कराना हो तब गांवबांभी की भूमिका ही महत्वपूर्ण मानी जाती थी।

-क्रमशः

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरुवार 01 जुलाई 2021

सम्पादकीय

ऊंची दुकान फीके पकवान

हमारे यहां कहावतों का बड़ा गहरा और गूढ़ अर्थ है। बेपढ़ों में तो हर प्रसंग पर कहावत का जड़ाव कथन को मणि-कांचन सा झामा पहना जो बात नहीं कही जाती वह कह दी जाती है। सुनने वाला समझ जाता है। इससे समय और व्यर्थ की माथाफोड़ी से बचाव हो जाता है। बड़े से बड़ा रगड़ा-झगड़ा, उत्तर-प्रत्युत्तर, कहा-सुनी की व्यर्थ की कुतरभसाई से आसानी से बचाव हो जाता है। यह दो टेपी कहावत कईबार बड़े अनर्थ से भी छटकी पाती देखी गई है।

ऐसी पुरानी सैकड़ों, हजारों असंख्य टकसाली कहावतें लोकजिह्वा पर जब जरूरत हो, कमलवत् फलादेश करती पाई जाती हैं। यह बड़ा दिलचस्प विषय है। कैसे, कहां से किस कदर इनका उपजना होकर ये छोटों-बड़ों में खजानों सी असरा पसरा लिए सुरक्षित एवं संरक्षित हैं। इन्हें बचाने की सख्त जरूरत है। इसके लिए उनको आज के सन्दर्भों से मण्डित करना होगा अन्यथा ये आउटडेटेड होकर स्वत: ही कालकवलित हो जायेंगी।

आज सर्वत्र ही शिक्षा का बोलबाला है। गांव-गांव इसकी अलख जगाई जा रही है। जिन्दे रहने के लिए स्वांस की तरह जीवनयापन के लिए शिक्षा लेकर शिक्षित होना जरूरी है। पहले 'चंटी बाजै चमचम, विद्या आवै गमगम', 'विद्या सीख-सीख सुधरांगा', 'घोटत विद्या खोदत पानी' तथा 'कंठत विद्या' जैसी कहावतों के सहारे विद्याध्ययन होता था। अब सब बदल गया है। कान और कण्ठ से सरक विद्या आंख-पोथियों-कुंजियों में होती मोबाईल के हिल स्टेशन पर सैर करती नजर आ रही है।

शिक्षा के मदर-से कमाई की दुकानें होते दृष्टिगोचर हो रहे हैं। मदरसों से विश्वविद्यालय बनते कुकुरमुत्ता से डिग्रीबांटू संस्थान छात्रों-अभिभावकों को बांगटा पकड़ अपने आंगन में आमंत्रित करने का खुशबूदार फूंबा सूंघाने की जुगत में लगे हैं। छात्र एकबार परिदर्शन कर प्रवेश ले, वह निष्णात होकर वहां से निकलने का शर्तिया सर्टिफिकेट लेकर संदीपनी संजीवनी के साथ आगे सफल जीवन की शुरूआत कर सकेगा। उसे केवल अर्थ ढीला करने का अर्थशास्त्र देखना है।

अब एम. की डिग्री किसी विषय को प्राप्त करने की सहूलियत है। रेगिस्तान में ऊंट की तरह कैरियर की करवट बिठाने की कला के लिए भी शिक्षण-प्रशिक्षण की सुनहरी व्यवस्था है। उन डिग्रियों की बांटन में मेहंदी का रंग तो लगता है पर वह रचाव और रंग नहीं रह गया है जैसे 'बांटन वारे को लगै ज्यों मेहंदी का रंग' और 'प्रेमरस मेहंदी राचणी।'

इन सबके कर्त्ताधर्त्ता सब समझते हुए सब कुछ समय के सच को देख रहे हैं। उनके हाथ में एक्सपर्ट कमेटी की घोषणा के गुबार हैं। उस कमेटी के अनुसार वे सुधार की धार चमकाते रहते हैं।

शोध का स्टेंडर्ड एम. ए. की तरह पीएच.डी. हो गया है। डी.लिट् अपेक्षाकृत अभी गरिमा की गोदड़ी ओढ़े 'गुदड़ी का लाल' बना हुआ है। पर उसकी ऑनरेरी डिग्री भी 'ऊंची दुकान फीके पकवान' ही बन गई है।

हमारे लिखने का तात्पर्य 'सारे कुए भांग' नहीं घुली हुई है मगर 'हाथ कंगन को आरसी क्या' आंख खुली रखते नम्बरांक दें तो ' रंक राजा बनेगा' या 'उतरी हिंगाण मंदर पाछै' धकेली मिलेगी।

मौखिक साहित्य इतिहास का अहम हिस्सा

शब्द रंजन 15 जून के अंक में प्रकाशित इतिहास लिखित ही नहीं, मौखिक और कण्ठासीन भी पढ़ा। वस्तुत: कर्नल जेम्स टॉड और मुहणोत नैणसी ने अपने इतिहास ग्रन्थों में जो कुछ लिखा उसका अधिकांश भाग मौखिक और कण्ठासीन ही है। टॉड जब-जब अलग-अलग राज्यों में गये तो वहां के राणाओं ने चतुर चारणों, भाटों और अमान्य-मान्य व्यक्तियों को उनके संग कर दिया।

उन लोगों ने जो मौखिक और कण्ठासीन ऐतिहासिक प्रसंग वयोवृद्ध पुरुषों से सुने उन्हें क्रमबद्ध लिख लिया। इन प्रामाणिक घटनाओं को डॉ. कन्हैयालाल सहल ने ऐतीय प्रवाद कहा। विद्वानों ने भी इतिहास माना। गुजरात और राजस्थान में ऐसे अनेक लोकगीत हैं जो ऐतिहासिक सन्दर्भों से जुड़े हैं। लाखा फूलाणी, राणा काचवा आदि-आदि। डॉ. महेन्द्र भानावत का यह मानना सही है कि मौखिक कण्ठासीन ऐतिहासिक सामग्री भी इतिहास की प्रामाणिक निधि है।

-दीनदयाल ओझा, जैसलमेर

साहस स्वाभिमान और जीवटवाली एक मां वह भी

कानोड़ गांव के भानावत परिवार में सन् 1901 में जन्मीं डेलूबाई अपने साहस, स्वाभिमान तथा जीवट का जीवन जीती सबकी 'डेलूमासी' बन गई। डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा 03 जुलाई को 28वीं पुण्यतिथि पर लिखी यह याद यहां प्रकाशित है जो डॉ. संजीव भानावत द्वारा सम्पादित अपने पिता डॉ. नरेन्द्र भानावत एवं माता डॉ. शान्ता भानावत के स्मृतिग्रंथ 'नमन' से उद्घृत है।

- सम्पादक

मां बड़ी जीवट वाली साहसी थी। उतनी ही स्वाभिमानी थी। हिम्मत कभी नहीं हारी। पुरुषार्थ कभी नहीं छोड़ा। मोल का पीसती। मोल का कातती। मोल का दलना खांडना और अधिक कर दिया। पांच सेर हार खांडती तब पांच आने खंडाई की मजूरी मिलती। हल्दी, धनिया, मिर्च, लूण (नमक) पीसती। मेहंदी पीसती। पापड़ बणती। पापड़ी बणती। बड़ी छावड़ी करती। खरावड़ी करती। वीड़े करती। इससे जो मजूरी मिलती उस पैसे को बचाती। एक-एक पैसा गांठ बांधती। इकट्ठी रकम हो जाती तब साहूकार बनिये को ब्याजणे दे देती। छह माह सालभर में ब्याज का हिसाब होता। उस ब्याज को फिर ब्याज पर चलाती। ऐसे कर-कर के, दु:ख देख-देख कर वह पैसा जोड़ती। कम-से-कम पैसा खाने में खर्च करती। अपनी कठोर और कठिन कमाई का यह पैसा उसने खाया नहीं, खोया नहीं और फालतू कभी खर्च किया नहीं तो किसी के आगे हाथ नहीं पसारना पड़ा।

पिताजी का जो गामड़ा था अरनिया वह मां ने पकड़ लिया। वहां हमारी बहुत अच्छी जमीजमाई दुकान की पेड़ी थी। पिताजी जो बेचने का सामान रखते- नमक, तेल, गुड़, नारेल, बीड़ी, तमाकू, सिन्दूर, मालीपना, वह सारा अरचुनी, परचुनी सामान मां रखने लग गई। कानोड़ में मामा ख्यालीलालजी मोरवण्या और दादाभाई कन्हैयालालजी मेहरी का मां को बड़ा भड़ा था। इन्हीं से रायमशवरा लेने, नामाठामा कराने, ब्याजबट्टा और उगाई पताई आदि का काम कराया जाता था। एक दादाभाई रतनलालजी दाणी थे, मासी के लड़के जो डूंगले से हर महीने आकर मां को सम्भाल जाते। मां को इन पर बड़ा विश्वास और भरोसा था।

इन्हीं के मार्गदर्शन और दिशानिर्देश में मां अपनी गृहस्थी चलाती। वह दौर एक ऐसा दौर था जहां खाने को गरीबी और पीने को चारों ओर अंधेरा था। उस घोर विपदा भरे वातावरण में इन तीनों के सहयोग और सम्बल ने हमारी डोलती नैया किनारे लगा दी। उनके उस ऋण और अहसान को मां सदैव याद करती और कहती- इन तीनों ने तीन नेत्रों की तरह अपना घर 'घाट' और हमारा घर 'वाद' समझकर जो देखभाल की उसके

कारण नानपण कट गया। जीजासा अमरचन्दजी नलवाया का भी सहयोग रहा जिन्होंने पिताजी की मृत्यु के बाद हमारे गामड़े के आसामियों को संभाला तथा उगाई-पताई का हिसाब आदि रखा किन्तु उनकी मिठाई खाने की तथा ताश खेलने की आदत एवं बैठे-ठालों की संगत ने उन्हें ही नहीं, उनके परिवार को चौपट कर दिया।

वह दौर एक ऐसा दौर था जहां खाने को गरीबी और पीने को चारों ओर अंधेरा था। उस घोर विपदा भरे वातावरण में इन तीनों के सहयोग और सम्बल ने हमारी डोलती नैया किनारे लगा दी। उनके उस ऋण और अहसान को मां सदैव याद करती और कहती- इन तीनों ने तीन नेत्रों की तरह अपना घर 'घाट' और हमारा घर 'वाद' समझकर जो देखभाल की उसके कारण नानपण कट गया। मां पढ़ी-लिखी नहीं थी किन्तु सब समझती थी। ऊंगलियां और उनकी टोपियों के सहारे हिसाब करती। कभी कंकरों का, मक्की के दानों का, कूंगसों का सहयोग लेती या फिर ठीकरियों का उपयोग करती। उनकी याददाश्त बड़ी तगड़ी थी। जबान की पक्की थी। दिन को जब ग्राहकी कम रहती तब मां सिलाई करती। बच्चों के झगले टोपी सीकर बेचती। लुगाइयों के लिए तने वाली, टूंकियों वाली कांचलियां सीती। तब मशीन तो थी नहीं, सारा काम हाथ से करती। सिलाई मोल की भी करती- कली वाले, मगजी वाले घाघरे सीती। गोदड़े-गोदड़ी के टांके लगाती।

मां पढ़ी-लिखी नहीं थी किन्तु सब समझती थी। ऊंगलियां और उनकी टोपियों के सहारे हिसाब करती। कभी कंकरों का, मक्की के दानों का, कूंगसों का सहयोग लेती या फिर ठीकरियों का उपयोग करती। उनकी याददाश्त बड़ी तगड़ी थी। जबान की पक्की थी। अच्छी साख थी।

गामड़े से जब भी कोई आता या कोई गाड़ी आती, सामान की टीप लिखकर सभी कम्पनी वालों को भेज देती। कम्पनी वाले उस टीप के अनुसार सामान तोलकर भेज देते और कागज में भाव-ताव लिख देते। अरनिया से यों डूंगला नजदीक था केवल दो किलोमीटर लेकिन यह टौंक रियासत में पड़ता था इसलिए सामान लाने ले जाने की मनाही थी। दाणी रास्ते में परेशान करता लेकिन मां जब-जब भी जाती, मासी-परिवार से मिल आती और लौटते समय सामान अवश्य लाती।

गामड़े में खाने की चीजों में मीठे भुजिये (पकौड़े) और मरमरी (सेव) खूब बिकती। मरमरी तो कानोड़ से मोड़ाबा की ले जाते। यह जाड़ी डांखले जैसी बड़ी स्वादिष्ट होती। बाजवक्त यह सब्जी का भी काम कर देती। भुजिये मां स्वयं बनाती। वह गेहूं का आटा तोलती तो हम गुड़ घोलने का काम करते। एक सेर भुजिये बेचने पर अधेली (आठ आने, एक रूपये में सौलह आने होते) मुनाफा की रहती। हर दूसरे-तीसरे दिन भुजिये बनते रहते। कभी-कभी मां अपने टोकरे में सामान जमाकर पास के मालखेजड़ी गांव में बिक्री के लिए जाती।

तब सस्ताई का जमाना था। एक आने का पांच सेर धान आता पर पैसों का अभाव था। कहावत है न कि 'कौड़ी की एवज में हाथी जा रहा पर कौड़ी हो तब न।' दिन को जब ग्राहकी कम रहती तब मां सिलाई करती। बच्चों के झगले टोपी सीकर बेचती। लुगाइयों के लिए तने वाली, टूंकियों वाली कांचलियां सीती। तब मशीन तो थी नहीं, सारा काम हाथ से करती। सिलाई मोल की भी करती- कली वाले, मगजी वाले घाघरे सीती। गोदड़े-गोदड़ी के टांके लगाती।

कानोड़ में रहती तो मुंहझांकते छाणे (कंडे) बीणने निकल जाती। कभी भाणपे के बीड़े में, कभी भीण्डर के छापेड़े में तो कभी लीमड़्या-करूमड़्या के वनखण्ड में चली जाती। एक-एक कर गोबर का सूखा पोइटा इकट्ठा कर टोकरे में ओढ़ने का सहारा देकर चार-चार फीट ऊंचा झारा चणती और सिर पर उठा लाती। इसके लिए दस-दस किलोमीटर का परिभ्रमण हो जाता। आते समय मौसम के अनुसार मां हमारे लिए कभी खजूरे, कभी गूंदे-गूंदी, कभी राइणें, कभी गूंगणें, कभी चणबोर तो कभी टीमरू सीताफल लाती। ऐसे झारे ला-लाकर माताजी ने छाणों का एक बड़ा पींडावड़ा ही तैयार कर दिया था। यह छह-सात फीट की लम्बाई-चौड़ाई के साथ इतनी ही करीब ऊंचाई लिए था।

अपना देश अपनी संस्कृति

माण्ड गायिका गवरीदेवी

माण्ड गायिका गवरीदेवी से पहलीबार 17 जुलाई 1976 को जोधपुर में उनके निवास ऊंची घाटी पर भेंट की। मेरे साथ मेरे समधी मोतीलाल नागोरी थे जो वहीं कपड़ा व्यापारी थे।

संगीत नाटक अकादमी की सचिव सुधा राजहंस से गवरीदेवी के सम्बन्ध में मोटी-मोटी जानकारी लेने के पश्चात मैंने गवरीदेवी से मिलने का कार्यक्रम बनाया। तब गवरीदेवी की उम्र 55 वर्ष थी और जब वे 5-6 वर्ष की थी तब गाना प्रारम्भ किया था। छोटी उम्र 13 वर्ष में ही उनका विवाह हो गया था। उनका कण्ठ बड़ा सुरीला था और मुख्यत: वे माण्ड और गजल गायकी के क्षेत्र में नामवरी लिये थीं।

वह समय सामन्तीकाल का था। तब गायिकाएं मुख्यत: राजदरबार तथा ठिकानों में गाने-बजाने का काम करती थीं। ऐसे करते गवरीदेवी ने उदयपुर, जयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर आदि ठिकानों के राजपरिवारों में गाकर बड़ा नाम कमाया।

सार्वजनिक मंच पर गाने का अवसर पहलेपहल अकादमी ने दिया। उसी के कार्यालय में कोमल कोठारी द्वारा उनके मूमल, केसरिया बालम, जलो म्हारी जोड़ी रो, आलीजा ढोला एकलड़ी मत छोड़ो जैसे गीत रेकार्डिंग किये गये। उसके बाद दिल्ली की संगीत नाटक अकादमी, उदयपुर के भारतीय लोककला मण्डल तथा आसाम, इम्फाल के रेडियो स्टेशन से उनके गाये गीतों का प्रसारण हुआ। उसके बाद विदेश यात्रा भी की। इन सबसे उन्हें और अच्छा खुलकर मुक्त रूप से गाने का साहस, सोहरत और धन भी मिला।

गवरीदेवी ने बताया कि अपने परिवार में वह अन्य किसी को तैयार नहीं कर रही है। राजा-महाराजाओं का काल तो याद इसलिए भी आता है कि तब उन्हें एक मिनिट की भी फुर्सत नहीं थी। सुनने वाले भी कद्रदान थे जो गीतों को बारीकी से समझते और रूचिपूर्वक सुनने के साथ पूछते रहते और फरमाइश कर यह गाओ, वह गाओ की याद दिलाते। वे बड़े शौकीन और समझू थे। अन्य जानेमाने प्रतिष्ठित ठिकानों में गाने वाले बड़े-बड़े गवैयों को बुलाकर सुनते और अच्छा इनाम इकराम देकर उनकी शान बढ़ाते।

गवरीदेवी ने बताया कि वे मोटे पुरुष थे। अब तो उन जैसा समझने वाला मुझे कहीं कोई नहीं मिला। माण्ड के मेरे गाने तो यहां भी कोई नहीं समझता। वे प्रशंसा तो करते हैं। भरपूर तालियों की गड़गड़ाहट भी मुझे खूब सुनने को मिलती है पर वह बात नहीं रही। असली पारखी हो तो गाने वाले को भी मजा आता है और अब तो सिनेमा भी आ गया है।

पूछने पर गवरीदेवी ने बताया कि यों अलग से मेरा कोई उस्ताद नहीं रहा। माता-पिता से ही सब कुछ सीखा। एकबार देवानंद आये तो मुझे मुम्बई ले गये और मेरा गोरबन्द, मूमल, केसरिया बालम गीत रेकार्डिंग करवाया तब अली अकबरखां म्युजिक डाइरेक्टर थे। गवरीदेवी को सबसे अधिक खुशी इस बात की थी कि उन्होंने अपनी गायकी डॉ. राधाकृष्णन्, डॉ. जाकिर हुसैन, लालबहादुर शास्त्री, पं. जवाहरलाल नेहरू तथा इन्दिरा गांधी के समक्ष प्रस्तुत कर और प्रशंसा प्राप्त की।

गवरीदेवी के अनेक मंचों पर अनेक बार मुझे उनसे माण्ड गीत सुनने का अवसर मिला। अनेक बार मैंने उनसे उनकी गायकी के बारे में पूछताछ की और कलामण्डल के मंच पर तो अल्लाजिलाईबाई और गवरीदेवी का सम्मिलित माण्ड कार्यक्रम भी रखा तब जोधपुर और बीकानेर की दोनों शीर्षस्थ माण्ड गायिकाओं की विशेषताओं से परिचित होकर श्रोता समुदाय ने भरपूर आनन्द लिया। दोनों गायिकाओं के लिए भी यह प्रयोग अविस्मणीय उपलब्धि बन गया था।

सिद्दीक : करताल-खरताल का भेद

जैसलमेर के झांपली गांव के सिद्दीक लंगा जाति के करताल वादक हैं। देखने में करताल लकड़ी की साधारण सी खपची होती है। दोनों हाथों से एक नाप की दो-दो खपची आपस में टकराने से जो विभिन्न तालें निकाली जाती हैं वही इस वाद्य की विशेषता है। यह बजाने में बड़ी दुष्कर है इसलिए इक्के-दुक्के ही इसे बजाने वाले हैं। जहां तक मुझे ज्ञात है लंगा-मांगणियारों में जिन होनहार कलाकारों को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री की उपाधि प्राप्त हुई उनमें सिद्दीक पहले कलाकार थे।

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी का कार्यालय जोधपुर में है। मैं उसके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों, बैठकों तथा उत्सव-समारोह में अनेक बार जोधपुर तथा कोटा, अलवर, बांसवाड़, जयपुर, बीकानेर गया। जसलमेर-बाड़मेर में तो उधर के लोकसंगीत का अनेक घण्टों का रेकार्डिंग किया। उदयपुर में प्रतिवर्ष ही भारतीय लोककला मण्डल द्वारा आयोजित लोकानुरंजन मेले में अनेक गायक, वादक, नर्तक कलाकारों को आमंत्रित करने का सौभाग्य भी मुझे मिला। संगीत नाटक अकादमी का तो मैं राज्य सरकार द्वारा प्रतिनिधि मनोनीत होकर उसकी संचालिका में भी रहा।

सिद्दीक से मेरी पहली मुलाकात 19 जुलाई 1976 को जोधपुर में, अकादमी के पावटा स्थित कार्यालय में हुई जब सुधा राजहंस सचिव थी। सिद्दीक ने बताया कि उनके पिता ईसाजी शादी बिरादरी बरात जैसे मांगलिक अवसर पर तबला-ढोलक बजाने वाले के साथ करताल की संगत करते थे। ये छोटी उमर से ही उनके साथ रहकर सीख गये। ईसाजी ने नब्बे की उम्र पूरी कर आठ वर्ष पूर्व शरीर छोड़ा। उन्होंने अपने पिता सोनाजी से बजाना सीखा। इस तरह बजाने की लैण ठेठूंठेठ से चली आ रही है।

सिद्दीक ने बताया कि वे अपने साथ भतीजे गफूर तथा लड़के समंद को तैयार कर रहे हैं। गफूर अठारह का और समंद छह वर्ष का है। सिद्दीक ने बताया कि अकादमी की महरबानी से पांच वर्ष पूर्व पहलीबार अपने दायरे से बाहर की दुनियां देखने को मिली। पहला प्रोग्राम जयपुर के रवीन्द्र मंच पर दिया। राजस्थान में बाड़मेर, अलवर, बीकानेर, सीकर, जैसलमेर, भीलवाड़ा, उदयपुर, अजमेर में कार्यक्रम दिये तो जनता ने पसन्द किये जिससे हमारा हिया भी बढ़ा।

उसके बाद तो हमें बम्बई, बड़ौदा, दिल्ली, कलकत्ता जैसे बड़े शहरों में मौका मिला। आकाशवाणी और टेलीविजन वालों ने हमारा कार्यक्रम रखा तो कहां से कहां पहुंचने का आनन्द मत पूछो। इससे वाहवाही के साथ पैसा भी खूब मिला जो हमारे बापदादों ने देखा तो नहीं पर सोचाा भी नहीं। मेरा भी यही हाल था। आसपास के इलाके में हमें बड़ी निगाहों से देखना शुरू कर दिया। पूरे परिवार की जिन्दगानी बदल गई। मन में आता है, पढ़े-लिखे होते तो कितना अच्छा रहता पर अब वो उम्र भी जाती रही।

सिद्दीक ने कहा कि करताल के साथ हालरिया, गोरबन्द, हिचकी, मेंहदी, झरमर बरसै मेह गीत गाते हैं। लोग सुनकर लट्टू हो जाते हैं तो फरमाइश भी करते हैं। उनकी फरमाइश से हमें और अधिक गाने का उत्साह मिलता है। करताल और खरताल का भेद पूछने पर सिद्दीक बोले कि खरताल में झींझा होता है पर यह बारीक भेद हर व्यक्ति नहीं समझता इसलिए करताल को भी खड़ताल नाम से ही जानते हैं। सिद्दी की उम्र 35 वर्ष है। जब वे 12 वर्ष के थे तब अकेले बजाने लगे। ये संगत भी करते हैं और स्वतंत्र रूप से गाते हुए बजाते भी हैं। बजाते समय कई तरह की रागें, धुनें तथा तालें लाते दर्शकों को चकित किये रहते हैं।

सचमुच में सिद्दीक जैसा कलाकार सिद्दीक ही हुआ। खड़ताल सीखने के लिए जो मेहनत, लगन और धुन सिद्दीक में रही, उनके समय में और बाद में भी किसी अन्य कलाकार में कम ही देखने को मिली। बेजोड़ कलाकार अपने समय का नहीं, युग का भी युगयुगीन होता है।

लघु समाचारपत्रों पर संगोष्ठी

राजस्थान सरकार द्वारा छोटे समाचारपत्रों के प्रति जो उपेक्षा और उदासीनता बरती जा रही है उसके प्रति तीव्र नाराजगी और गहरी चिंता प्रकट करने के लिए संप्रत्ति संस्थान द्वारा 16 फरवरी 2000 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था 'लघु समाचारपत्र क्यों?'

संगोष्ठी का प्रारंभ करते हुए प्रसिद्ध कवि-चिंतक नंद चतुर्वेदी ने कहा कि लघु समाचारपत्रों की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी लोकतंत्र में सामान्य जन अथवा छोटे आदमी की है। जिस तरह हम एक सभ्य समाज और लोकतंत्र में किसी नागरिक की उपेक्षा नहीं कर सकते उसी तरह बड़े या छोटे अखबार की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्य ही है कि हमारा सारा जीवन बड़े और छोटे वर्गों में बांट दिया गया है और जैसे बड़े सब जगह सुरक्षित हैं उसी तरह बड़े अखबार भी सुरक्षित और सरकारों के लिए आवश्यक हो गए हैं जबकि समाज को बचाने का काम सदैव से ही छोटे-छोटे अखबारों ने किया है।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि बड़े अखबार बड़े लोगों की बात ही करते हैं और उन्हीं का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिन्दगी के हजारों छोटे-छोटे कष्ट, अभाव और आवश्यकताओं को निर्भीकता पूर्वक बताने वाले तो छोटे अखबार ही हैं। यदि स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास भी देखा जाये तो गांधीजी ने कोई बड़ा अखबार नहीं निकाला बल्कि छोटे आकार में केवल अठपनिया अखबार निकाल कर ही उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की नींवें हिला दी थीं।

गोष्ठी संयोजक गीतकार किशन दाधीच ने सवाल उठाया कि अखबारों के बड़े और छोटे होने की क्या कसौटी है? उनका आकार है या इन्वेस्टमेंट का बड़ा तामझाम अथवा कि विज्ञापनों और पाठकों की बड़ी संख्या या कि गुणवत्ता और लोकजीवन के अभाव अभियोग को उजागर करने की क्षमता?

इसका उत्तर देते हुए हिन्दुस्तान जिंक के पूर्व राजभाषा प्रबंधक पुरुषोत्तम छंगाणी ने कहा कि लघु समाचारपत्र एक प्रकार के लघु उद्योगों तरह ही हैं लेकिन जिस तरह सरकार लघु उद्योगों को सब तरह की सहायता और जिन्दगी देने की पहल करती है उसी तरह लघु समाचारपत्रों को भी बचाने, विज्ञापन देने तथा नैतिक समर्थन प्रदान करने की पहल करनी चाहिए।

उनका आग्रह यह भी रहा कि लघु समाचारपत्रों को बड़े पत्रों की तरह नहीं दिखना चाहिए और उन्हें उनका लघु संस्करण होने की आवश्यकता से भी बचना चाहिए।

प्रो. कनकमल उदावत का मत था कि छोटे और बड़े का विचार पाठकों में चेतना जगाने की दृष्टि से होना चाहिए। मैं यह मानता हूं कि आज भी हजारों की संख्या में शहरों, कस्बों तथा गांवों में निकलने वाली लघु पत्रिकाएं यह काम पूरी मुस्तैदी से कर रही हैं, इसलिए उन्हें लोकतंत्र का सच्चा पहरेदार माना जाना चाहिए।

संगोष्ठी में साप्ताहिक लघु पत्र 'सुलगते प्रश्न' के सम्पादक सुरेन्द्र शर्मा ने अपने अनुभवों के आधार पर कहा कि पिछले आठ वर्ष से इस पत्र का सम्पादन करते हुए उन्हें पग-पग पर जिस तरह के छोटेपन का बोध कराया गया, वह कोई अच्छा अनुभव नहीं है, अलबत्ता लेखकों और पाठकों का सहयोग यथेष्ट रूप में उन्हें अवश्य प्राप्त है। संगोष्ठी में अन्य अनेक लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये जिनके प्रति सम्प्रति के संस्थापक डॉ. भानावत ने आभार जताया। - **भा.**

बाजार / समाचार

पारस जे. के. हॉस्पिटल में मनाया डॉक्टर्स-डे

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में डॉक्टर्स डे पर सभी डॉक्टर्स ने केक काटकर एक-दूसरे

का मुंह मीठा करवाया और एक-दूसरे को शुभकामनाएं दी। इस दौरान हॉस्पिटल संचालक की ओर से सभी डाक्टर्स को बुके व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने बताया कि मरीजों का जीवन बचाना ही डॉक्टर्स का धर्म और कतर्व्य है। विश्वजीत कुमार ने सभी डॉक्टर्स को आपदा की इस घड़ी में इनके अतुलनीय योगदान के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर कोरोना की दूसरी लहर के दौरान काल का ग्रास बने डॉक्टर्स को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

उदयपुर (वि.)। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा का वार्षिक अधिवेशन अध्यक्ष अर्जुन खोखावत के नेतृत्व में वर्चुअल आयोजित किया गया। सभा मंत्री विनोद कच्छारा ने वर्षभर में किए गए कार्यक्रमों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष महेन्द्र सिंघवी ने आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया।

बैठक में उपाध्यक्ष कमल नाहटा, पूर्व अध्यक्ष सुर्यप्रकाश मेहता, पूर्व मंत्री प्रकाश सुराणा, तेयुप अध्यक्ष अजीत छाजेड़, अभातेयुप सहमंत्री अभिषेक पोखरना, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन डागलिया, जीतो चेयरमैन राजकुमार सुराणा, शान्तिलाल सिंघवी, कमल कर्णावट, लादुलाल मेड़तवाल, राकेश चपलोत ने संपूर्ण कार्यकारिणी सदस्यों के कार्यों की प्रशंसा की। तकनीकी सहयोग स्वप्निल कच्छारा तथा धन्यवाद आलोक पगारिया ने ज्ञापित किया।

हृदय की गंभीर बीमारी से मिली राहत

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा

में चिकित्सकों ने एक युवती को हृदय की गंभीर बीमारी से निजात दिलाई है।

पीआईएमएस के चैयरमेन आशीष अगवाल ने बताया कि सोनिया (23) बदला हुआ नाम को श्वांस फूलने की तकलीफ के चलते पीआईएमएस हॉस्पिटल लाया गया। जांच में पता चला कि मरीज का बाया वॉल्व सिकुड़ा हुआ है। पीआईएमएस के कार्डियोलॉजी विभाग में मरीज के हृदय में बलून व तार की मदद से सिकुड़न को खोल ऑपरेशन को सफलतापूर्वक किया। मरीज को सात दिन भर्ती रखने के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया। मरीज अभी स्वस्थ्य है। ऑपरेशन इन्टरवेन्शनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. महेश जैन ने किया जिसमें नॉन-इनवेसिव कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. उमेश तथा निश्चेतना विभाग के डॉ. विपिन सिसोदिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आपातकालीन चिकित्सा सेवा को मजबूत कर सुदृढ़ टीकाकरण अभियान की आवश्यकता : डॉ. रवि प्रकाश

उदयपुर (वि.)। कोविड 19 वैश्विक महामारी अभी खत्म नहीं हुई है। पहली लहर से ज्यादा घातक दूसरी लहर रही और तीसरी लहर आने की अटकलें शुरू हो चुकी हैं। ऐसे में जरूरी है कि लोग मास्क पहनना, सोशल डिसटेंसिंग व बार-बार हाथ धोने की पालना करें। यह बात पारस जेके हॉस्पिटल में आपातकालीन चिकित्सा विभाग के सलाहकार और प्रमुख डॉ. रविप्रकाश ने कही।

उन्होंने कहा कि योग्य उम्मीदवारों का जल्द से जल्द टीकाकरण करने की आवश्यकता है। जिन्होंने दोनों डोज लगवाली हैं उनमें कोविड संक्रमण की संभावना कम होती है। डॉ. रविप्रकाश ने बताया कि कोविड रोगियों के लिए आपातकालीन चिकित्सा विभाग में सही समय पर जांच कर उन्हें जरूरी इलाज देने, उनकी स्थिति नियंत्रण में करने, उन्हें क्रिटिकल केयर यूनिट में या वार्ड में स्थानांतरित करने की आवश्यकता होती है, इसलिए सभी अस्पतालों में इन विभागों को मजबूत करने का यही सही समय है।

किडनी में कैंसर की गांठ का सफल ऑपरेशन

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने दो वर्ष के बच्चे की किडनी में कैंसर की गांठ का सफल ऑपरेशन किया है। मूत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. मुकेश सेवाग ने बताया कि भीनमाल निवासी भूपेन्द्र कुमार (2) को मूत्र त्यागने में तकलीफ होने पर पारस जे. के.

हॉस्पिटल में लाया गया। सीटी स्केन में पता चला कि बच्चे की बांई किडनी में आधे फीट की कैंसर की गांठ है। इस पर चिकित्सकों ने अफ्रंट सर्जरी द्वारा गांठ निकाल दी। अब बच्चा स्वस्थ है व उसका किमोथैरेपी देकर आगे का उपचार किया जा रहा है।

स्कॉडा कुशक भारत में लॉन्च

उदयपुर (वि.)। स्कॉडा ऑटो ने 'इंडिया 2.0' प्रोजेक्ट के तहत अपनी बहुप्रतीक्षित एसयूवी- स्कॉडा कुशक की बुकिंग के शुभारंभ तथा

इसकी कीमतों की घोषणा के साथ ही भारत के प्रति अपने नए संकल्प को और मजबूती प्रदान करने की दिशा में कदम बढ़ाया है।

ज़ैक हॉलिस, ब्रांड डायरेक्टर-स्कॉडा ऑटो इंडिया, ने कहा कि इस साल की शुरुआत में भारत में वर्ल्ड प्रीमियर के बाद से ही कुशक ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की है, जो भारत के लिए निर्मित बिल्कुल नए स्कॉडा के रूप में दूसरे वाहनों से अलग है। इस वाहन के प्रत्येक इंच को ग्लोबल मॉडल के अनुरूप तैयार किया गया है, जो पंखों वाले बेहद सम्मानित ऐरो बैज को गर्व के साथ धारण करता है। स्कॉडा ऑटो इंडिया ने 'एक देश, एक क़ीमत' के अपने सिद्धांत को आगे बढ़ाते हुए पूरे देश में नई स्कॉडा कुशक को 10.49 लाख रुपये की बेहद आकर्षक एक्स-शोरूम क़ीमत पर बाजार में उतारा है। कुशक का निर्माण उन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए किया गया है, जो ग्राहकों के लिए मायने रखते हैं।

अल्पेश लोढ़ा जार के महासचिव नियुक्त

उदयपुर (वि.)। जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान

(जार) के उदयपुर के अध्यक्ष अजयकुमार आचार्य ने अपनी दो वर्षीय कार्यकारिणी की घोषणा की। कार्यकारिणी में महासचिव अल्पेश लोढ़ा, उपाध्यक्ष मंगीलाल जैन, भूपेश दाधीच, कोषाध्यक्ष रामसिंह चदांणा, संगठन सचिव विकास बोकड़िया, प्रचार सचिव राजेन्द्रकुमार पालीवाल, कार्यकारिणी सदस्य आनंद शर्मा, राजेन्द्र हिलोरिया, संजय व्यास, प्रकाश मेघवाल, अनिलकुमार जैन, जोधाराम देवासी, प्रवीण मेहता, आमीर मोहम्मद शेख को मनोनीत किया है।

सलाहकार शैलेष व्यास, सुमित गोयल, डॉ. रवि शर्मा, संजय खाब्या, सनत जोशी, पंकजकुमार शर्मा, विष्णु शर्मा 'हितैषी', विपिन गांधी, मुख्य संरक्षक डॉ. तुक्तक भानावत तथा संरक्षण पवन खाब्या एवं जगदीश विजयवर्गीय होंगे।

रेनेडी सिंह, बेमबेम देवी और शाजी प्रभाकरन जिंक फुटबॉल से जुड़े

उदयपुर (वि.)। भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान रेनेडी सिंह, ख्यातिमान महिला फुटबॉलर ओइनम बेमबेम देवी और फुटबॉल

दिल्ली के अध्यक्ष शाजी प्रभाकरन वेदांता हिंदुस्तान जिंक की अनोखी पहल के रूप में देश में प्रसिद्ध जिंक फुटबाल के सलाहकार बोर्ड में शामिल हो गए हैं जो जिंक फुटबॉल की बेहतरी के लिए अपना अमूल्य मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करेंगे। सलाहकार बोर्ड की सह-अध्यक्षता जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा और वेदांता फुटबॉल के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल करेंगे।

रेनेडी सिंह ने कहा कि जिंक फुटबॉल के पास प्रभावशाली बुनियादी ढांचा है और उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं। उनमें सर्वश्रेष्ठ बनने की क्षमता है। वे आगे चलकर भारतीय फुटबॉल टीम के लिए कुछ बेहतरीन प्रतिभाएं पैदा कर सकते हैं। बेमबेम देवी ने कहा कि मैं जिंक फुटबॉल परिवार का हिस्सा बनकर उत्साहित हूं। यहां प्रभावशाली प्रबंधन और सुविधाएं हैं। मैं उदयपुर में नवोदित फुटबॉलरों से मिलने के लिए उत्सुक हूं। शाजी प्रभाकरन ने कहा कि मैं पहले एक बार जिंक फुटबॉल अकादमी का दौरा कर चुका हूं और वहां के विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे से खुश हूं। हम सब मिलकर इस पहल को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाएंगे।

शिविर में 32 यूनिट रक्तदान

उदयपुर (वि.)। शिविर में 32 यूनिट रक्तदान उदयपुर। यूनाइटेड होटेलिएर्स ऑफ उदयपुर सोसायटी द्वारा सामाजिक मुहीम #udaipur-fightscorona के अंतर्गत होटल आनंद भवन में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें 32 यूनिट रक्तदान हुआ।

सोसायटी के अध्यक्ष यूबी श्रीवास्तव, सचिव रूपम सरकार, उपाध्यक्ष आशीष छाबड़ा, ट्रेजरार उज्जवल मेनारिया ने बताया कि सोसायटी समय-समय पर होटल एवं टूरिज्म इंडस्ट्री से जुड़े लोगों के लिए सामाजिक कार्य करती रहती है। मुहिम #udaipur-fightscorona के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों एवं दानदाताओं से राशि एकत्रित की जायेगी और यह राशि उन चुनिंदा होटल कर्मचारियों के परिजनों को वितरित की जाएगी जो करोना के चलते हमसे बिछड़ गए। सोसायटी के समस्त सदस्य इन परिवार के इच्छुक सदस्यों को रोजगार के मौके देने में भी पूर्ण मदद करेंगे।

पूरे विश्व में भामाशाह दानवीर के पर्याय के रूप में सुचर्चित

उदयपुर (का. सं.)। महावीर युवा मंच द्वारा सोमवार को हाथीपोल स्थित भामाशाह सर्कल पर दानवीर भामाशाह की 474वीं जयंती कोरोना प्रोटोकोल के साथ मनाई गई। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व गृहमंत्री एवं शहर विधायक गुलाबचंद कटारिया थे। अध्यक्षता महापौर जी. एस. टांक ने की। विशिष्ट अतिथि उपमहापौर पारस सिंघवी, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, पूर्व यूआईटी चैयरमेन रवीन्द्र श्रीमाली, पूर्व महापौर चंद्रसिंह कोठारी, महिला अरबन को-ऑपरेटिव बैंक की पूर्व अध्यक्ष किरण जैन, पूर्व प्रधान गिर्वा तख्तसिंह शक्तावत, समाजसेवी गजपालसिंह राठौड़ थे।

गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि जिस समय दानवीर भामाशाह ने अपनी सम्पत्ति का समर्पण किया, उस समय मेवाड़ की स्वतंत्रता और संस्कृति की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप कड़ा संघर्ष कर रहे थे। अर्थ की दृष्टि से महाराणा और सेना के लिए धनाभाव था। तब भामाशाह ने अपना निजी अर्जित धनकोश महाराणा के चरणों में अर्पित कर दिया। कटारिया ने कहा कि भामाशाह दानवीर ही नहीं थे, उन्होंने युद्धवीर के रूप में तलवार उठाकर हल्दीघाटी रणक्षेत्र में सेना का नेतृत्व भी किया।

मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर ने कहा कि कोरोना के इस संक्रमण को देखते हुए इस काल में भी अनेक दानीमानी भामाशाह के रूप में जनकल्याणार्थ पीछे नहीं रहे। भामाशाह की जयंती और पुण्यतिथि मनाने का यही उद्देश्य है कि आने वाली हर पीढ़ी में प्रताप और भामाशाह के व्यक्तित्व की प्रभावना बढ़े।

अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने कहा कि 'वीर शिरोमणि' के रूप में तो राजस्थान की माटी तो सबके लिए नमनीय है ही पर दानवीरों की दृष्टि से भी इतिहास सदा ही आंखों पर चढ़ा हुआ है। इस कड़ी में भामाशाह का नाम तो 'दानवीर' का पर्याय ही हो गया। भामाशाह तीन-तीन महाराणाओं के प्रधानमंत्री रहे। चित्तौड़ में भामाशाह की हवेली और मोतीबाजार आज भी उनके यश-प्रताप के साक्षी हैं। संकट के समय न केवल समग्र राजकोश की राशि अपितु स्वयं का अर्जित धन भी अपने स्वामी के चरणों में अर्पित करने वाला पूरे विश्व में कोई अन्य उदाहरण नहीं मिलेगा। इस अवसर पर उनके श्रीचरणों में अपने श्रद्धाभाव व्यक्त करते मैं यह कहना चाहूंगा कि उनके संबंध में एक ऐसा प्रकाशन दें जो आमजन को उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पुख्ता प्रामाणिक जानकारी लिए हो।

महामंत्री हर्षमित्र सरूपरिया ने बताया कि कार्यक्रम में मंच के अजय पोरवाल, डी. के. मोगरा, ओमप्रकाश पोरवाल, कमल कावड़िया, बसंत खिमावत, जयेश चंपावत, रमेश सिंघवी, सतीश पोरवाल, आलोक पगारिया, अर्जुन खोखावत, अरविंद सरूपरिया, अशोक लोढ़ा, भगवती सुराणा, कुलदीप नाहर, नीरज सिंघवी, डॉ. स्नेहदीप भाणावत, प्रमीला एस. पोरवाल, ललिता कावड़िया, रश्मि पगारिया, मंजुला सिंघवी, डॉ. सीमा चंपावत मौजूद थे।

संयोजक नीरज सिंघवी ने बताया कि समारोह में जनप्रतिनिधि एवं सर्वसमाज के पदाधिकारियों में सर्वश्री सन्नी पोखरना, ललित सिंह सिसोदिया, राजेंद्र परिहार, कमल बाबेल, शैलेन्द्र चौहान, भरत पूर्बिया, देवनारायण धायभाई, जगदीश शर्मा, विजय आहुजा, सिद्धार्थ शर्मा, देवेन्द्र जावलिया, प्रहलाद चौहान, विष्णु प्रजापत, चंचल अग्रवाल, देवेन्द्र साहू, विजय प्रजापत, जितेन्द्र सिंह शक्तावत, मुकुल मेहता, लोकेन्द सिंह, कनवर निमावत, महंत अशोक परिहार, देवीलाल सालवी, हेमेन्द्र लौहार, चन्द्रेश सोनी, दलपत सुराणा, नानालाल बया, आकाश वागरेचा, रूचिका चौधरी, सोनिका जैन, छोगालाल भोई, हेमंत बोहरा, कर्णमल जारोली, दिनेश गुप्ता, मुकेश सेठ, प्रवीण मेहता, आनंद पूर्बिया, नरपतसिंह राव, नारायणसिंह चंदाणा, यशवंत भावसार, अंकित सेठ तथा मनोज मेघवाल उपस्थित थे।

सिम्स में 700 ग्राम वजनी नवजात के दिल की सफल सर्जरी

उदयपुर (वि.)। अहमदाबाद के सिम्स हॉस्पिटल में 24 दिन की 700 ग्राम वजनी एक प्रीमैच्योर नवजात के हृदय की सफल शल्य चिकित्सा की गई है। मेहसाणा के खेरालु में जन्मी बच्ची के हृदय में विकार था जिसका सर्जरी ही एकमात्र विकल्प था। नवजात सांस में रुकावट वाली स्थिति में आ गई थी और अचानक उसने सांस लेना बंद कर दिया था। सिम्स के पीडियाट्रिक कार्डियोलोजिस्ट डॉ. दिव्येश सादड़ीवाला ने परीक्षण पश्चात सर्जरी के लिए रेफर किया।

सिम्स में पीडियाट्रिक कार्डियक सर्जन डॉ. शौनक शाह ने बताया कि हृदय विकार को सुधारने के लिये, पीडीए लाईगेशन सर्जरी की जरूरत होती है लेकिन इस केस में यह कई सारे कारणों से बहुत रिस्की थी। नवजात का जन्म समय से पहले हो गया था और उसका वजन बहुत कम था। उसमें कुछ संक्रमणों के लक्षण भी दिखाई दे रहे थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि जन्म से ही वजन कम होने से नवजात की स्थिति नाजुक हो गई थी। इसके बावजूद सिम्स के चिकित्सकों ने नवजात की सफलतापूर्वक पीडीए लाईगेशन सर्जरी की। सर्जरी में डॉ. नीरेन भावसार, डॉ. हीरेन ढोलकिया, डॉ. चिंतन सेठ तथा डॉ. अमित चितलिया का सहयोग रहा। बच्ची अभी रिकवर कर रही है।

हर्षवर्द्धन की प्रेरक कहानी 'मेक इट लार्ज स्टोरी'

उदयपुर (वि.)। सीग्रैम्स रॉयल स्टैग ने हमेशा से ही युवाओं को बड़े सपने देखने, उन्हें पूरा करने और मेक इट लार्ज के जज्बे को प्रोत्साहित करने का काम किया है। अपनी फिलॉसफी को मजबूती देते हुये, रॉयल स्टैग बड़े सपने देखने वाले उन लोगों की प्रेरणादायी यात्रा को दिखा रहा है जो अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के प्रयास में निडर बने रहे। कार्तिक मोहिन्द्रा, सीएमओ, पर्नोड रिकार्ड इंडिया ने कहा कि एक युवा पर्वतारोही हर्षवर्द्धन जोशी की अहम यात्रा को दिखाते हुये गर्व का अनुभव हो रहा है। हर्षवर्द्धन ने माउंट एवरेस्ट की चढ़ाई पूरी की और पहले ही प्रयास में सर्वोच्च चोटी पर पहुंच गये। इसके लिए वे पिछले 6 महीने से कड़ी ट्रेनिंग कर रहे थे। कार्तिक मोहिन्द्रा ने कहा कि रॉयल स्टैग ने हमेशा से ही लोगों को जीवन में सपने देखने, उन्हें पूरा करने और मेर्क इट लार्ज के लिये प्रेरित किया।

सुषमा अध्यक्ष, अर्चना सचिव मनोनीत

उदयपुर (वि.)। रोटरी क्लब उदयपुर मीरा के वार्षिक अधिवेशन में वर्ष 2021-22 के लिए अध्यक्ष सुषमा कुमावत एवं सचिव अर्चना व्यास को मनोनीत किया गया।

अध्यक्षा विजयलक्ष्मी गलूंडिया ने बताया कि नवनिर्वाचित अध्यक्ष शीघ्र ही अपनी कार्यकारिणी घोषित करेंगी। इस वर्ष रोटरी मीरा की थीम सर्व टू चेंज लाइवस है जिसे ध्यान में रख सेवा कार्य किए जाएंगे।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है।
इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है-
अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

शब्द रंजन के विशिष्ट सदस्य के रूप में उदयपुर के प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत से 5000 रूपये तथा शब्द रंजन के सहयात्री के रूप में हंसा हिंगड़ से 1500 रूपये साभार प्राप्त हुए।

बोर्ड की परीक्षाएं निरस्त होने से छात्र पशोपेश में

सेंट्रल और स्टेट की बोर्ड परीक्षायें निरस्त हो गई हैं। स्टूडेन्ट्स को सीधा प्रोमोट किया जाएगा। यह आने वाले भविष्य के लिए बहुत बड़ा खतरा साबित हो सकता है। अभी के लिए यह क्षणिक समाधान दिखाई दे रहा है। शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों के लिए तो बिल्कुल ही सुखद नहीं है।

सीधा प्रोमोशन छोटी कक्षाओं के लिए तुलनात्मक कम परन्तु बाहरवीं क्लास के लिए पूर्णतया कठिन हो सकता है। बाहरवीं के बाद से ही स्टूडेंट्स के करियर की इमारत बननी शुरू होती है। एक तरह से यह क्लास करियर और मेहनत के बीच छलनी का काम करती है। यह फैसला प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए दु:खद है।

साल भर मेहनत करने वाले छात्र अंत में आकर उस पंक्ति में खड़े हैं जहां पढ़ाई के नाम पर टाइमपास करने वाले छात्रों का पूरा झुण्ड है। उन छात्रों को मैं कहना चाहूंगा कि मेहनत कभी भी जाया नही जाती। न ही ज्ञान नष्ट होता है। अभी बहुत मौके आएंगे जहां वे अपनी मेहनत और सपनों को साकार कर सकते हैं। लापरवाह छात्र जो बहुत हर्षोन्माद में डूबे हुए हैं उनकी आगे की राह बहुत कठिन कांटों भरी है। वे जिस बॉल पर आउट हो सकते थे उसको नो बॉल कर दिया। अवसर मिला है तो वे आगे के लिए पूरी तैयारी करें।

शिक्षकों को भी उनको वर्तमान स्तर के हिसाब तैयार करना होगा। वे यह मान कर चलें कि उनकी केवल क्लास ही चेंज हुई है, स्तर नहीं। अत: उनको उसी स्तर के हिसाब तैयारी करवानी होगी। अभिभावकों को शिक्षा में जिम्मेदार की भूमिका निभानी होगी। प्रबुद्ध और समझदार लोगों को आगे आना होगा। गुरुकुल से लेकर स्कूल तक शिक्षा का बहुत महत्व रहा है। इसको बनाये रखने में छात्रों की मदद करनी होगी। माहौल और हालात दोनों उसी अनुकूल बनाने होंगे।

- राजेन्द्र गोयल

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (8)

-देवीलाल सामर

शब्द रंजन के 01 मार्च 2021 के अंक में आप पढ़ चके हैं कि भारत सरकार के सूचना मंत्रालय संगीत नाटक संभाग के आर्थिक सहयोग से सामरजी द्वारा 'इन्द्रपूजा' नाटिका की रचना की गई। पं. नेहरू के समक्ष दिल्ली में उसका भव्य प्रदर्शन बड़ा ही असरकारी रहा। इसी से प्रभावित हो इसे गांवों में प्रदर्शन योग्य बनाने का सुझाव दिया फलस्वरूप मध्यप्रदेश-राजस्थान के गांवों में इसके दो हजार प्रदर्शन दिये गये।

इस अंक में पढ़िये सामरजी द्वारा एक-के-बाद-एक नवीन नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से अखिल भारतीय प्रदर्शन का रोमांचक विवरण।

इस नाटिका में सौहार्द्र और सज्जनता की निरंकुशता और अत्याचार पर विजय थी। इसमें यह भी दर्शाया गया था कि सहयोग और भाईचारे से सभी काम सरल हो जाते हैं। पत्थर से भी पानी निकाला जा सकता है। रेती में खेती की जा सकती है तथा पहाड़ों पर खेत लहलहा सकते हैं। जहां जंगल नहीं हैं वहां जंगल उगाये जा सकते हैं। बेजा जमीन को सरसब्ज किया जा सकता है।

इस नाटिका की रचना में मुझे पूरे छह माह लगे। उसके लिए 50 कलाकारों का दल संगठित किया गया तथा पोशाकों, रंगमंचीय उपकरणों, प्रकाश-ध्वनि व्यवस्था पर काफी खर्च करना पड़ा। भारत सरकार की योजना के अनुसार इसकी रचना के लिए 25 हजार रूपये का अनुदान प्राप्त हुआ और बाद में 18 प्रदर्शनों के लिए 18 हजार की अतिरिक्त धन राशि भी उपलब्ध हुई।

इसका प्रथम प्रदर्शन 08 अक्टूबर 1956 को दिल्ली के ब्रोडकास्टिंग हाउस में यूनेस्को सम्मेलन के अवसर पर हुआ। उसमें विश्व के प्राय: सभी बड़े देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। यह नृत्यनाटिका एक तरह से इसी सम्मेलन के लिए तैयार की गई थी। इसके लिए ब्रोडकास्टिंग हाउस के खुले मैदान में एक विशेष रंगमंच तैयार किया गया। हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू उस सम्मेलन के नायक थे। उन्हीं के आमंत्रण पर यह विश्व सम्मेलन भारत में आयोजित हुआ था। पंडित नेहरू को इस विशिष्ट अवसर के लिए तैयार की हुई इस रचना के प्रति भी विशेष दिलचस्पी थी।

मुख्य प्रदर्शन से पूर्व आठ दिन तक इस नाटिका के रिहर्सल दिल्ली में होते रहे और पंडित नेहरू इसकी प्रगति से निरन्तर अवगत होते रहे। जब इसकी सफलता में उन्हें कोई सन्देह नहीं रहा तो उन्होंने इसके सफल और गौरवपूर्ण प्रदर्शन के लिए हमें अनुमति दे दी। प्रदर्शन बहुत ही रोचक और मनमोहक था। प्रदर्शनोपरान्त पंडितजी रंगमंच पर आए और मुझे गले लगा लिया। तदुपरान्त उन्होंने विश्व सम्मेलन के सामने मुझे विशेष रूप से प्रस्तुत किया। जाने से पूर्व पंडितजी ने महानिदेशक आकाशवाणी को मजाक ही मजाक में कह दिया कि इस दल को आठ दिन तक दिल्ली में कैद कर लिया जाय। माथुर साहब ने जब यह सन्देश मुझ तक पहुंचाया तो मुझे उसका मर्म समझ में नहीं आया।

माथुर साहब ने दूसरे दिन इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त की। नेहरूजी चाहते थे कि इस नाटिका को देश के सभी विकास मंत्रियों एवं विकास आयुक्तों को दिखाया जाय और 16 अक्टूबर की तारीख भी इस विशिष्ट प्रदर्शन के लिए निश्चित कर ली गई। उस दौरान देश के सभी राज्यों के विकास मंत्रियों और विकास आयुक्तों को तार द्वारा दिल्ली आने का आमंत्रण दे दिया गया। इस बीच हमने भी इस नाटिका में और अधिक रंग भर दिया और वेशभूषा साजसज्जा आदि में कई परिवर्तन कर दिये। प्रदर्शन से पूर्व स्वयं पंडितजी ने नाटिका एवं हमारा परिचय दिया और कहा कि सामुदायिक विकास के विचार पर रचित हमारे देश की यह प्रथम नृत्य नाटिका है जिसका प्रचार सारे देश में होना चाहिये।

नाटिका का प्रदर्शन अत्यधिक सफल हुआ। प्रदर्शनोपरान्त पंडितजी पुन: रंगमंच पर चढ़ गये और फोटोग्राफर को स्वयं बुलवाकर कलाकारों के साथ नाना विधि फोटो खिंचवाये। जब सब लोग बाहर निकल गये तो पंडितजी ने एक मर्मभरी बात मुझे कही- आपका यह नाट्य मुझे बहुत पसंद आया है परन्तु यह शहरी जनता के लिए नहीं, ग्रामीण जनता को दिखाने की चीज है। अत: इसे गांवों में ले जाओ परन्तु इसके लिए आपको छोटा दल तैयार करना पड़ेगा। इतना बड़ा दल, इतनी बड़ी रोशनियां एवं कलाकारों की भव्य पोशाक देखकर गांव वाले

भयभीत हो जायेंगे। इनके ये गोटे-किनारी एवं गले में पहने चमकीले जेवर देखकर उनकी आंखें चौंधिया जायेगी।

मैं थोड़े में ही पंडितजी का मंतव्य समझ गया। मैंने उसी समय पंडितजी को आश्वासन दे दिया कि हम शीघ्र ही आपके आदेशों का पालन करने का यत्न करेंगे। पंडितजी की उस बात के बाद मैंने कई रातें बिन नींद बिताईं और उदयपुर जाकर मैं नाटिका के संक्षिप्तीकरण एवं सरलीकरण के कार्य में संलग्न हो गया। सारे देश से मुझे निमंत्रण प्राप्त होने लगे और बात ही बात में मुझे 40 प्रदर्शनों का बुलावा आ गया। सर्वप्रथम मध्यप्रदेश में इसके प्रदर्शनों ने धूम मचा दी। तदुपरान्त राजस्थान ने भी मध्यप्रदेश का अनुकरण किया और तीन-चार वर्षों में हमने सारे भारतवर्ष को छान मारा।

सन् 1959 तक इस नाटिका के लगभग 2000 प्रदर्शन हो चुके थे। हमने इस नाटिका को सरल बनाया तो इतना बनाया कि इसमें हमें किसी औपचारिक रंगमंच की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई। गांवों में गये तो किसी चौपाल या चबूतरों पर हमने प्रदर्शन दे दिया। यदि बिजली उपलब्ध नहीं हुई तो उपलब्ध गैस या नाइयों द्वारा प्रज्वलित मशालों से ही काम चलाया गया। कभी-कभी तो पीछे एवं अगल-बगल की दीवारों की जगह हमने गांवों में प्रयुक्त होने वाली चारपाइयों का प्रयोग किया। उनमें वृक्षों की टहनियां खौंस दी गई तथा लोकनाट्यों की मूल अनौपचारिक शैली में उसके सैकड़ों प्रदर्शन दे डाले। जब इसके 1000 प्रदर्शन पूरे हुए तो उदयपुर में बड़ी धूमधाम के साथ हजारी आयोजित की गई।

हमें इन्दौर कांग्रेस अधिवेशन पर इन्द्रपूजा का यह ग्राम्य संस्करण पंडित नेहरू के समक्ष दुबारा प्रस्तुत करने का मौका मिला और उनका आशीर्वाद पुन: प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इन्द्रपूजा के बाद मैंने अन्य कई नृत्य नाटिकाओं की रचना की जिन्हें सर्वत्र ख्याति मिली। उनमें ढोलामारू, म्हाने चाकर राखोजी, राष्ट्रपूजा, मूमल, आजादी की कहानी, पनिहारी आदि प्रमुख थी। चार वर्ष तक इन्हीं नाटिकाओं की धूम मचती रही।

सन् 1958 में एक विशेष प्रसंग मेरी जिन्दगी में आया। मैं कुचामण के पास एक गांव में अपने शोधार्थी दल के साथ पड़ाव डाले हुए था। वहां प्रथमबार कठपुतलियों का एक अधूरा खेल देखने का मुझे अवसर मिला। मैं बचपन से ही इन राजस्थानी पुतलियों के खेल कई बार देख चुका था।

खेल करने वाला एक अत्यधिक वृद्ध पुरुष था। घनी दाढ़ी थी। आंखों से ऐसा लगता था जैसे उसका तेज उतर गया है। वे बड़ी गहरी और पैनी अवश्य थीं परन्तु डबडबाई हुई और करूणा से भरी हुई थीं। आधा खेल जब उसका खत्म हो गया तो वह हाथ पर हाथ धर कर बैठ गया। कहने लगा, बाबूजी लगता है आप पुतली के पारखी मालूम पड़ते हैं। मुझे मालूम हो गया कि आप इस आधे खेल से संतुष्ट नहीं हैं परन्तु क्या करूं लाचार हूं। मेरी आधी पुतलियां उस सामने वाली दुकान पर गिरवी रखी हैं।

मुझे पहलीबार यह ज्ञात हुआ कि पुतलियां भी जेवर की तरह गिरवी रखी जाती हैं। मैंने पूछा कि तुम्हें उन्हें गिरवी रखने की क्यों आवश्यकता हुई तो बुड्ढा रो पड़ा। बोला नहीं गया। मैं आगे और कुछ पूछकर उसका जी नहीं दुखाना चाहता था। मैं दौड़कर दुकानदार के पास गया। वह काफी लम्बे समय से मेरी ओर देख ही रहा था, और चाह रहा था कि मैं उसके पास जाकर वस्तुस्थिति से अवगत होऊं। दुकानदार कहने लगा, बाबूजी जान पड़ता है आप कला के पारखी हैं। यह बुड्ढा बड़े काम का आदमी है। पुतली चलाने में आज उसके सानी का आदमी और कोई नहीं परन्तु बेचारे को दुर्दिन ने आ घेरा है। लंबा-चौड़ा परिवार। बेटे, पोते, नाती आदि कुल मिलाकर 50 आदमी उसके घर नित प्रात: भोजन करते हैं फिर सारी गमी, जाति-पांति के रस्म-रिवाज उसी में बेचारा डूबा हुआ रहता है। घर के और लोग तो सब खाना पहिनना जानते हैं।

यह कलाकार आज ही सुबह 50 रूपये मुझसे ले जाकर यह पुतलियों का टोकरा मेरी दुकान पर छोड़ गया है। अपना पेट ही काटकर मुझे दे गया है। बाबूजी मैं भी क्या करूं। हमारा तो धंधा ही ब्याज, बट्टे से चलता है। मुझसे आगे कुछ भी नहीं कहा गया। मैंने अपनी जेब से 50 रूपये निकाले और बनिये को देकर वह टोकरा ले आया और पुतली वाले को देकर उससे प्रार्थना की कि वह अपना पूरा खेल मुझे दिखलावे।

बुढ्ढे के चेहरे पर रौनक छा गई। आनन्द के आंसू जमीन पर टपक पड़े। उसने बड़े उत्साह के साथ अपना खेल पूरा किया और वो चीज मुझे दिखलाई जो मैंने जिन्दगी भर नहीं देखी थी। मैं उसके बाद तीन-चार दिन उस गांव में और ठहर गया और बुढ्ढे से भरपूर सम्पर्क किया और राजस्थानी पुतलियों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की। बुढ्ढे की पुतलियों के सब चित्र भी खींचे और उसका पूर्ण आशीर्वाद लेकर मैं उदयपुर लौटा।

यह घटना मेरे जीवन में स्वर्णक्षरों में लिखने योग्य है क्योंकि उसी दिन के बाद पुतलियों ने मेरे जीवन में प्रवेश कर लिया। मैं रात-दिन पुतलियों की ही बात सोचने लगा तथा अनेक प्रकार की पुतलियों का संग्रह भी मैंने बना लिया। उस समय तक मुझे पुतलियों की विशेष कुछ जानकारी नहीं थी परन्तु शौक बहुत था और कला मण्डल में पुतलियों का एक छोटा सा कक्ष भी स्थापित कर लिया। मुझे सौभाग्य से एक पारम्परिक पुतलीदल भी मिल गया जो दो-तीन रात तक कला मण्डल का मेहमान बना। उस दल के माध्यम से मैंने राजस्थानी पुतलियों की खूब छानबीन भी की तथा राजस्थानी शैली में एक टूटी-फूटी रामलीला की रचना भी कर ली। - **क्रमश:**

तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू उस सम्मेलन के नायक थे। उन्हीं के आमंत्रण पर विश्व सम्मेलन भारत में आयोजित हुआ था। पंडित नेहरू को इस विशिष्ट अवसर के लिए तैयार की हुई इस रचना के प्रति भी विशेष दिलचस्पी थी। पंडित नेहरू इसकी प्रगति से निरन्तर अवगत होते रहे। प्रदर्शन बहुत ही रोचक और मनमोहक था। प्रदर्शनोपरान्त पंडितजी रंगमंच पर आए और मुझे गले लगा लिया। उन्होंने विश्व सम्मेलन के सामने मुझे विशेष रूप से प्रस्तुत किया। नेहरूजी चाहते थे कि इस नाटिका को देश के सभी विकास मंत्रियों एवं विकास आयुक्तों को दिखाया जाय।

प्रदर्शनोपरान्त पंडितजी ने एक मर्मभरी बात मुझे कही- आपका यह नाट्य मुझे बहुत पसंद आया है परन्तु यह शहरी जनता के लिए नहीं, इसे गांवों में ले जाओ परन्तु इसके लिए छोटा दल तैयार करना पड़ेगा। इतनी बड़ी रोशनियां एवं कलाकारों की भव्य पोशाक देखकर गांव वाले भयभीत हो जायेंगे। इनके ये गोटे-किनारी एवं गले में पहने चमकीले जेवर देखकर उनकी आंखें चौंधिया जायेगी। हमने इस नाटिका को सरल बनाया तो इतना बनाया कि इसमें हमें किसी औपचारिक रंगमंच की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई। गांवों में गये तो किसी चौपाल या चबूतरों पर हमने प्रदर्शन दे दिया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।